PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 325
दि. 28.08.2026,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

नेपाल में बाढ़ का महाविनाश, 359 लोगों की मौत; 1,500 लापता, 288 भारतीय पर्यटकों की तलाश तेज

नई दिल्ली। नेपाल में अचानक आई विनाशकारी बाढ़ ने बड़े पैमाने पर तबाही मचा दी है। बाढ़ और भूस्खलन के कारण मरने वालों की संख्या बढ़कर 359 हो गई है, जबकि करीब 1,500 लोगों के लापता होने की सूचना है। लापता लोगों में 288 भारतीय नागरिक और पर्यटक भी शामिल बताए जा रहे हैं। आपदा के बाद नेपाल के कई इलाकों में राहत और बचाव अभियान लगातार जारी है। अब तक 800 से अधिक लोगों को सुरक्षित निकाले जाने की जानकारी सामने आई है। हालात को देखते हुए इसे हाल के वर्षों में नेपाल की सबसे गंभीर प्राकृतिक आपदाओं में से एक माना जा रहा है। अचानक आई बाढ़ ने नेपाल के कई जिलों में जनजीवन को पूरी तरह प्रभावित कर दिया है। भोटेकोशी नदी में अचानक आई बाढ़ के बाद बड़े पैमाने पर तबाही की खबर सामने आई। तेज बहाव के कारण सड़कें, पुल और संपर्क मार्ग प्रभावित हुए हैं, जबकि कई इलाकों में संचार व्यवस्था भी ठप हो गई है। राहत एवं बचाव दल प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं।

नेपाल पुलिस के अनुसार, बाढ़ प्रभावित इलाकों में अब तक बड़ी संख्या में शव बरामद किए जा चुके हैं। भोटेकोशी नदी में आई अचानक बाढ़ के बाद 332 शव बरामद होने की जानकारी दी गई है। वहीं, तिब्बत में भी तीन लोगों की मौत हुई है और वहां लापता लोगों की संख्या 558 तक पहुंचने की बात सामने आई है। लगातार खराब परिस्थितियों के बीच मृतकों और लापता लोगों की संख्या में बदलाव की आशंका बनी हुई है।

नेपाल पर्यटन बोर्ड के अनुसार, लापता लोगों में विदेशी नागरिकों की संख्या भी काफी अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक 517 विदेशी और 127 नेपाली नागरिक लापता बताए जा रहे हैं। लापता विदेशी नागरिकों में अमेरिका के 60 से अधिक लोग शामिल हैं। इसके अलावा यूक्रेन, ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका और जापान सहित कई देशों के नागरिकों के भी संपर्क से बाहर होने की जानकारी सामने आई है।

आपदा ने नेपाल के सुरक्षा और सरकारी तंत्र को भी प्रभावित किया है। लापता लोगों में नेपाल पुलिस के 28 जवान, नेपाल सेना के 44 जवान, आर्म्ड पुलिस फोर्स के 13 जवान, कस्टम्स ऑफिस के 15 कर्मचारी और इमिग्रेशन ऑफिस के चार कर्मचारी भी शामिल बताए गए हैं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि बाढ़ का प्रभाव सामान्य आबादी के साथ-साथ राहत और प्रशासनिक व्यवस्था पर भी कितना व्यापक रहा है।

नेपाल पुलिस की ओर से विभिन्न जिलों में हुई मौतों का आंकड़ा भी जारी किया गया है। धाडिंग में 27, नुवाकोट में 12, रसुवा में दो, गोरखा में 20, नवलपरासी ईस्ट में 62, तनाहुन में 12, चितवन में 108 और नवलपरासी वेस्ट में 15 लोगों की मौत की जानकारी दी गई है। चितवन और नवलपरासी ईस्ट जैसे इलाकों में बड़ी संख्या में लोगों की जान जाने से स्थानीय स्तर पर राहत कार्यों का दबाव और बढ़ गया है।

भारत के 288 नागरिकों को लेकर बढ़ी चिंता

नेपाल में फंसे और लापता भारतीय नागरिकों को लेकर भारत सरकार लगातार नेपाल के अधिकारियों के संपर्क में है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जैस्वाल ने बताया कि लापता भारतीयों में पर्यटकों के अलावा जलविद्युत परियोजनाओं में काम करने वाले लोग भी शामिल हैं। नेपाल और तिब्बत में मौजूद भारतीय नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए राजनयिक माध्यमों से प्रयास किए जा रहे हैं।

तमिलनाडु के 21 लोगों को सुरक्षित बचाए जाने की जानकारी भी सामने आई है। ये लोग कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए गए थे। इसके अलावा तिब्बत में करीब 200 भारतीय नागरिकों ने भारत सरकार से सहायता मांगी है। आपदा के कारण नियमित मार्ग प्रभावित होने से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के सामने वापसी की समस्या खड़ी हो गई है।

लापता भारतीयों की सूची में त्रिशूली-1 जलविद्युत परियोजना में काम करने वाले 73 भारतीय नागरिक भी शामिल बताए गए हैं। जलविद्युत परियोजना के आसपास बाढ़ का प्रभाव होने के कारण वहां काम करने वाले कर्मचारियों की सुरक्षा को लेकर चिंता बनी हुई है। भारतीय अधिकारी स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर इन लोगों की स्थिति का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

नेपाल में बड़ी संख्या में भारतीय पर्यटकों के फंसे होने के कारण भारत सरकार ने राहत और बचाव प्रयासों को तेज किया है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, भारतीय राजनयिक अधिकारी नेपाल में फंसे नागरिकों के संपर्क में हैं और प्रभावित लोगों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित निकालने के प्रयास किए जा रहे हैं।

केरल और तमिलनाडु के लोग भी प्रभावित

नेपाल की प्राकृतिक आपदा में भारत के अलग-अलग राज्यों के नागरिकों के प्रभावित होने की जानकारी सामने आई है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार केरल के 53 लोग नेपाल में फंसे बताए जा रहे हैं। वहीं तमिलनाडु के 106 लोगों के वहां फंसे होने की जानकारी है। इसके अलावा आंध्र प्रदेश के आठ तीर्थयात्रियों के लापता होने की सूचना सामने आई है। इन लोगों के परिवारों में चिंता का माहौल है और परिजन सरकार से लगातार संपर्क बनाए हुए हैं।

आपदा के कारण कई सड़क मार्ग और संपर्क रास्ते प्रभावित हुए हैं। ऐसे में जिन इलाकों में भारतीय नागरिक मौजूद हैं, वहां तक राहत दलों को पहुंचाने में भी कठिनाइयां सामने आ रही हैं। संचार व्यवस्था बाधित होने के कारण कई लोगों से संपर्क स्थापित करना भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

आपदा में इंसानियत की मिसाल

विनाशकारी बाढ़ के बीच जहां तबाही और लूटपाट की तस्वीरें सामने आ रही हैं, वहीं कुछ घटनाएं मानवता और साहस की मिसाल भी पेश कर रही हैं। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में नेपाल पुलिस और स्थानीय लोगों को बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में एक नवजात और करीब दो साल के बच्चे को बचाते हुए देखा गया। तेज पानी के बीच बच्चों को सुरक्षित निकालना राहत दल और स्थानीय लोगों के साहस को दर्शाता है।

एक अन्य वीडियो में एक हाथी को पानी में उतरकर बाढ़ में फंसे लोगों को बचाने की कोशिश करते हुए दिखाया गया है। ऐसे दृश्य इस कठिन समय में इंसान और जानवर के बीच दिखाई देने वाली संवेदनशीलता को सामने लाते हैं।

बाढ़ में भी लूटपाट के आरोप

वहीं, आपदा के बीच कुछ स्थानों से चिंताजनक तस्वीरें भी सामने आई हैं। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में कुछ लोग तेज बहाव वाली नदी में उतरकर बहकर आ रहे सिलेंडर और अन्य सामान को निकालते दिखाई दे रहे हैं। कुछ लोगों के सामान लेकर जाते हुए वीडियो भी सामने आए हैं। हालांकि, सोशल मीडिया पर सामने आए ऐसे वीडियो और उनके दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है।

आपदा के समय राहत सामग्री और बहकर आए सामान को लेकर अफरा-तफरी की स्थिति पैदा होना प्रशासन के लिए नई चुनौती बन सकती है। ऐसे समय में लोगों से संयम बरतने और राहत कार्यों में सहयोग करने की अपील की जा रही है।

भारत ने बढ़ाया मदद का हाथ

नेपाल में भीषण बाढ़ के बाद भारत ने राहत सहायता भेजना शुरू कर दिया है। भारत की ओर से राहत सामग्री लेकर दो विमान नेपाल भेजे गए हैं। प्रभावित क्षेत्रों में संचार व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित होने के कारण राहत और बचाव कार्यों में तकनीकी चुनौतियां भी सामने आ रही हैं।भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि नेपाल में फंसे भारतीय नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। भारतीय राजनयिक अधिकारी स्थानीय प्रशासन और नेपाल सरकार के संपर्क में हैं। जिन भारतीयों के परिवारों को अपने परिजनों के बारे में जानकारी नहीं मिल पा रही है, उनके लिए भी संबंधित सरकारी तंत्र के माध्यम से जानकारी जुटाने का प्रयास किया जा रहा है। नेपाल की इस त्रासदी ने एक बार फिर पहाड़ी और नदी क्षेत्रों में अचानक आने वाली बाढ़ के खतरे को सामने ला दिया है। भारी बारिश, नदियों का अचानक बढ़ता जलस्तर और पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन जैसी घटनाएं कुछ ही समय में बड़े पैमाने पर जनजीवन को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसी परिस्थितियों में समय पर चेतावनी, मजबूत संचार व्यवस्था और प्रभावी आपदा प्रबंधन बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है।

नशे के खिलाफ जंग में अब विवेक राज सिंह को बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली। देश में मादक पदार्थों के बढ़ते नेटवर्क और उसके खिलाफ चल रही कार्रवाई के बीच भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी विवेक राज सिंह को नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो यानी एनसीबी में डिप्टी डायरेक्टर जनरल की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। असम-मेघालय कैडर के 2006 बैच के आईपीएस अधिकारी विवेक राज सिंह की नियुक्ति प्रतिनियुक्ति के आधार पर पांच वर्षों के लिए की गई है। कैडर से कार्यमुक्त होने के बाद वह एनसीबी में अपना पदभार संभालेंगे। लंबे पुलिस करियर में कानून-व्यवस्था, नक्सल विरोधी अभियान, दंगा नियंत्रण, सुरक्षा और प्रशासनिक जिम्मेदारियों का अनुभव रखने वाले विवेक राज सिंह की नई जिम्मेदारी को मादक पदार्थों के खिलाफ देशव्यापी अभियान के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। विवेक राज सिंह मूल रूप से मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं और उन्होंने संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा-2005 में सफलता हासिल की थी। इसके बाद उन्हें बिहार कैडर आवंटित किया गया। पुलिस सेवा में शुरुआती दौर से ही उन्होंने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में काम किया और कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। बिहार में सहायक पुलिस अधीक्षक के तौर पर उनकी पहली प्रमुख जिम्मेदारियों में सासाराम क्षेत्र में नक्सल विरोधी अभियान शामिल रहा। उस समय कानून-व्यवस्था और उग्रवाद से जुड़ी चुनौतियों के बीच पुलिस अधिकारियों के लिए जमीनी स्तर पर काम करना बेहद कठिन माना जाता था। ऐसे माहौल में उन्होंने सुरक्षा अभियानों के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर संवाद और समन्वय को भी महत्व दिया। विवेक राज सिंह ने बिहार के औरंगाबाद और लखीसराय जैसे जिलों में भी पुलिस अधिकारी के रूप में सेवाएं दीं। इन क्षेत्रों में कानून-व्यवस्था से जुड़े विभिन्न मामलों को संभालने के दौरान उन्हें प्रशासनिक और पुलिसिंग दोनों स्तरों पर काम करने का अनुभव मिला। उनके करियर का एक उल्लेखनीय अध्याय वर्ष 2008 में सासाराम में हुए दंगों से जुड़ा रहा। तनावपूर्ण स्थिति के दौरान वह मौके पर पहुंचे और उपद्रवियों से बातचीत कर हालात को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संवेदनशील परिस्थितियों में बल प्रयोग के साथ संवाद और स्थिति को समझकर कार्रवाई करने की क्षमता ने उनके पुलिस करियर को अलग पहचान दी। बिहार में अपनी सेवाओं के दौरान वह कुछ समय के लिए पटना में पुलिस अधीक्षक रेलवे के पद पर भी तैनात रहे। रेलवे पुलिस की जिम्मेदारी के दौरान यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे परिसरों में कानून-व्यवस्था और अपराध नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण विषय उनकी जिम्मेदारियों में शामिल रहे। अलग-अलग तरह की पुलिसिंग का अनुभव मिलने के बाद उनके करियर में आगे कई महत्वपूर्ण पड़ाव आए। विवेक राज सिंह का करियर केवल एक ही राज्य या कैडर तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने बिहार के बाद असम-मेघालय कैडर में भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां संभालीं। विवाह के बाद उन्होंने अपना कैडर बिहार से असम-मेघालय स्थानांतरित कराया। असम में उन्होंने नगांव और दरांग जैसे जिलों में पुलिस अधीक्षक के रूप में काम किया। इन जिलों में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के साथ-साथ अपराध नियंत्रण और प्रशासन के साथ समन्वय उनकी जिम्मेदारियों का हिस्सा रहा।

मध्य एशिया में भारत की कूटनीतिक पकड़ मजबूत करेंगे पीएम मोदी, 29 अगस्त से शुरू होगा दो देशों का दौरा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 29 अगस्त से मध्य एशिया के दो महत्वपूर्ण देशों उज्बेकिस्तान और किर्गिस्तान की यात्रा पर जाएंगे। विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को प्रधानमंत्री के इस दौरे की जानकारी देते हुए बताया कि मोदी 29 और 30 अगस्त को उज्बेकिस्तान में रहेंगे, जबकि इसके बाद 31 अगस्त से 1 सितंबर तक किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित होने वाले 26वें शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। प्रधानमंत्री का यह दौरा ऐसे समय हो रहा है, जब मध्य एशिया भारत की विदेश नीति, क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापार, ऊर्जा और संपर्क व्यवस्था के लिहाज से लगातार महत्वपूर्ण होता जा रहा है। माना जा रहा है कि इस यात्रा के दौरान भारत दोनों देशों के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने के साथ-साथ क्षेत्रीय मुद्दों पर भी सहयोग बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ेगा। विदेश मंत्रालय के सचिव पश्चिम सिबी जॉर्ज ने प्रधानमंत्री के दौरे की जानकारी देते हुए कहा कि नरेंद्र मोदी उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति के निमंत्रण पर 29 और 30 अगस्त को उज्बेकिस्तान जाएंगे। दोनों देशों के बीच पिछले कई वर्षों से द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्तर पर व्यापक एवं सार्थक संवाद होता रहा है। भारत और उज्बेकिस्तान के संबंधों को वर्ष 2011 में रणनीतिक साझेदारी का स्वरूप दिया गया था। इसके बाद दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और अन्य क्षेत्रों में सहयोग लगातार आगे बढ़ा है। प्रधानमंत्री की प्रस्तावित यात्रा को इसी रणनीतिक साझेदारी को नई दिशा देने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

उज्बेकिस्तान मध्य एशिया का एक महत्वपूर्ण देश है और भौगोलिक दृष्टि से भी भारत के लिए इसकी खास अहमियत है। मध्य एशिया के साथ भारत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। व्यापारिक मार्गों, शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता के स्तर पर भारत तथा मध्य एशियाई देशों के बीच लंबे समय से संपर्क रहा है। आधुनिक दौर में इन पुराने संबंधों को रणनीतिक और आर्थिक साझेदारी में बदलने पर भारत लगातार जोर देता रहा है। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा इसी व्यापक नीति का हिस्सा मानी जा रही है।

भारत और उज्बेकिस्तान के बीच आतंकवाद से मुकाबला, क्षेत्रीय सुरक्षा, व्यापार, निवेश, ऊर्जा, परिवहन संपर्क और डिजिटल क्षेत्र जैसे मुद्दे सहयोग के प्रमुख क्षेत्र रहे हैं। दोनों देश इस बात पर भी जोर देते रहे हैं कि मध्य एशिया में स्थिरता और शांति का वातावरण क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है। अफगानिस्तान की स्थिति भी मध्य एशियाई क्षेत्र की सुरक्षा के लिहाज से महत्वपूर्ण है। ऐसे में भारत और उज्बेकिस्तान के बीच सुरक्षा सहयोग तथा क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर विचार-विमर्श का महत्व और बढ़ जाता है।

प्रधानमंत्री के उज्बेकिस्तान दौरे के दौरान दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के बीच विभिन्न द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा होने की संभावना है। बातचीत में आपसी व्यापार और निवेश बढ़ाने के उपायों के साथ-साथ ऊर्जा, परिवहन और संपर्क परियोजनाओं पर भी विचार किया जा सकता है। भारत लंबे समय से मध्य एशिया के देशों के साथ अपने आर्थिक संपर्क को मजबूत करने की कोशिश करता रहा है। ऐसे में उज्बेकिस्तान के साथ संबंधों को विस्तार देना भारत की मध्य एशिया नीति के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

उज्बेकिस्तान यात्रा के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 31 अगस्त से 1 सितंबर तक किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में रहेंगे। यहां वह 26वें शंघाई सहयोग संगठन यानी एससीओ शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। एससीओ भारत के लिए एक महत्वपूर्ण बहुपक्षीय मंच है, जहां सदस्य देश क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, आर्थिक सहयोग और आपसी संपर्क से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी से भारत को इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण रखने का अवसर मिलेगा। विदेश मंत्रालय के सचिव सिबी जॉर्ज ने एससीओ की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि संगठन की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद जैसी तीन प्रमुख चुनौतियों से निपटना था। उन्होंने कहा कि ये चुनौतियां आज भी बनी हुई हैं। ऐसे में एससीओ की भूमिका वर्तमान वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों में पहले की तुलना में और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। भारत लगातार आतंकवाद के खिलाफ कड़ा रुख अपनाता रहा है और बहुपक्षीय मंचों पर भी आतंकवाद को किसी भी रूप में उचित नहीं ठहराने की आवश्यकता पर जोर देता रहा है।

'पारो' विवाह के पीछे का सच तलाशेगा महिला आयोग

नई दिल्ली। हरियाणा के मेवात क्षेत्र, खासकर नूंह जिले में कथित रूप से प्रचलित 'पारो' या 'मोलकी' विवाह को लेकर राष्ट्रीय महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) ने गंभीर रुख अपनाया है। महिलाओं की कथित खरीद-फरोख्त, अंतरराज्यीय मानव तस्करी, जबरन विवाह, हिंसा और शोषण से जुड़ी शिकायतों के बाद आयोग ने मामले की वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए पांच सदस्यीय तथ्य-जांच समिति गठित की है। समिति नूंह और मेवात के अन्य इलाकों का दौरा कर जमीनी स्थिति का आकलन करेगी और गठन के 10 कार्यदिवस के भीतर अपनी रिपोर्ट आयोग को सौंपेगी।

आयोग के सामने आई शिकायतों में आरोप लगाया गया है कि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की महिलाओं और युवतियों को दूसरे राज्यों से बिचौलियों के माध्यम से मेवात क्षेत्र में लाया जाता है। इसके बाद स्थानीय पुरुषों से उनका विवाह कराया जाता है। आरोपों के अनुसार, कुछ मामलों में विवाह के लिए आर्थिक लेन-देन भी किया जाता है। शिकायतों में यह भी दावा किया गया है कि कुछ महिलाओं को कथित तौर पर एक से अधिक बार बेचा गया, जबकि कुछ मामलों में हिंसा, जबरन साथ रहने और अन्य प्रकार के शोषण की शिकायतें सामने आई हैं। हालांकि, इन सभी आरोपों की वास्तविकता और व्यापकता जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

राष्ट्रीय महिला आयोग ने इन शिकायतों को केवल सामाजिक प्रथा का मामला न मानकर महिलाओं के अधिकारों और संभावित मानव तस्करी से जुड़े गंभीर विषय के रूप में लिया है। आयोग की तथ्य-जांच समिति यह पता लगाएगी कि 'पारो' या 'मोलकी' विवाह वास्तव में किस स्तर तक प्रचलित है और इसके पीछे किसी संगठित बिचौलिया नेटवर्क या अंतरराज्यीय तस्करी गिरोह की भूमिका है या नहीं।

इस जांच के लिए गठित समिति में सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी डॉ. पी.एम. नायर, सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी बी.के. सिन्हा, दिल्ली विश्वविद्यालय की एसोसिएट प्रोफेसर सीमा सिंह, फिल्मकार एवं अभिनेत्री त्रिप्ती भोइर तथा आयोग के विधि अधिकारी मनमोहन वर्मा शामिल हैं। समिति में पुलिस प्रशासन, शिक्षा, कानून और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े अनुभव वाले सदस्यों को शामिल किया गया है, ताकि मामले के अलग-अलग पहलुओं की जांच की जा सके। समिति के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौती यह पता लगाना होगी कि दूसरे राज्यों से महिलाओं को नूंह और आसपास के क्षेत्रों तक कैसे लाया जाता है। इसमें बिचौलियों की भूमिका, संपर्क के माध्यम, आर्थिक लेन-देन और विवाह की प्रक्रिया की जानकारी जुटाई जाएगी। यदि किसी संगठित नेटवर्क के प्रमाण सामने आते हैं तो समिति संबंधित एजेंसियों को उसके खिलाफ कार्रवाई के लिए आवश्यक सुझाव भी दे सकती है।

जांच के दौरान महिलाओं की कानूनी पहचान का मुद्दा भी महत्वपूर्ण रहेगा। समिति यह देखेगी कि दूसरे राज्यों से विवाह के बाद आने वाली महिलाओं के पास पहचान संबंधी आवश्यक दस्तावेज हैं या नहीं। उनके विवाह का कानूनी पंजीकरण हुआ है या नहीं और उन्हें सरकारी योजनाओं तथा नागरिक सुविधाओं का लाभ मिल रहा है या नहीं, इसकी भी जानकारी जुटाई जाएगी।

महिलाओं के संपत्ति और विरासत संबंधी अधिकारों की स्थिति की भी जांच की जाएगी। विवाह के बाद महिलाओं को परिवार और समाज में समान अधिकार मिल रहे हैं या नहीं, उन्हें संपत्ति में हिस्सा दिया जा रहा है या नहीं तथा उनके बच्चों के अधिकारों की स्थिति क्या है, इन विषयों पर भी समिति ध्यान देगी। आयोग का उद्देश्य केवल विवाह की प्रक्रिया की जानकारी जुटाना नहीं, बल्कि उससे जुड़े महिला अधिकारों के पूरे दायरे को समझना है। समिति कथित हिंसा और शोषण की शिकायतों की भी पड़ताल करेगी। यदि किसी महिला को विवाह के बाद शारीरिक या मानसिक हिंसा का सामना करना पड़ा है तो उसके पास शिकायत करने और न्याय पाने के क्या विकल्प हैं, यह भी जांच का हिस्सा होगा। महिलाओं को पुलिस, अदालत, कानूनी सहायता और सरकारी संस्थाओं तक पहुंच उपलब्ध है या नहीं, इसकी वास्तविक स्थिति का आकलन किया जाएगा। बाल विवाह के आरोपों को लेकर भी समिति जांच करेगी। यदि कम उम्र की लड़कियों के विवाह से संबंधित मामले सामने आते हैं तो उनकी प्रकृति, संख्या और परिस्थितियों का पता लगाया जाएगा। समिति यह भी देखेगी कि स्थानीय प्रशासन और पुलिस ऐसे मामलों की रोकथाम के लिए क्या कदम उठा रहे हैं और कानून के प्रावधानों को किस तरह लागू किया जा रहा है।

इंस्टाग्राम के लालच से शेयर बाजार ठगी का बड़ा खेल उजागर

गांधीनगर/सूरत। सोशल मीडिया पर शेयर बाजार में निवेश कर कम समय में भारी मुनाफा कमाने का लालच देकर लोगों को ठगने वाले साइबर गिरोह के खिलाफ गुजरात पुलिस ने बड़ी कार्रवाई की है। सूरत साइबर क्राइम सेल ने महाराष्ट्र के परभणी जिले से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने इंस्टाग्राम पर शेयर बाजार में निवेश से संबंधित विज्ञापन के जरिए सूरत के एक व्यक्ति को अपने जाल में फंसाया और अलग-अलग बैंक खातों में रकम जमा करवाकर उससे 9.58 लाख रुपये से अधिक की ठगी की। जांच आगे बढ़ने पर एक बैंक खाते से करोड़ों रुपये के लेनदेन और देश के अलग-अलग राज्यों में दर्ज कई शिकायतों का भी पता चला है।

पुलिस के मुताबिक, साइबर ठगी की शुरुआत सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर चलाए जा रहे निवेश संबंधी विज्ञापनों से हुई। इन विज्ञापनों में शेयर बाजार में निवेश के जरिए आकर्षक रिटर्न मिलने का दावा किया जाता था। विज्ञापन देखने वाले संभावित निवेशकों से संपर्क कर उन्हें एक टेलीग्राम ग्रुप में जोड़ा जाता था। इसके बाद निवेश और मुनाफे से संबंधित जानकारियां साझा कर उन्हें भरोसे में लेने की कोशिश की जाती थी।

सूरत निवासी शिकायतकर्ता भी इसी तरीके से कथित तौर पर आरोपियों के संपर्क में आया। उसे टेलीग्राम ग्रुप के माध्यम से एक वेबसाइट का लिंक भेजा गया। पुलिस के अनुसार, यह वेबसाइट देखने में शेयर बाजार में निवेश करने वाले वास्तविक प्लेटफॉर्म जैसी प्रतीत होती थी। शिकायतकर्ता को वेबसाइट पर पंजीकरण करने और डीमैट अकाउंट बनाने के लिए कहा गया। इसके बाद निवेश के नाम पर अलग-अलग बैंक खातों में रकम जमा कराई गई।

शिकायतकर्ता ने वेबसाइट पर दिए गए बैंक खातों में कुल 9,58,998.98 रुपये ट्रांसफर किए। निवेश करने के बाद प्लेटफॉर्म पर उसके खाते में रकम बढ़ती हुई दिखाई गई। कथित तौर पर शेयर बाजार में हुए लेनदेन

और मुनाफे के आंकड़े भी प्लेटफॉर्म पर प्रदर्शित किए जाते थे। इससे शिकायतकर्ता को यह विश्वास हुआ कि उसका निवेश वास्तविक शेयर बाजार गतिविधियों में लगाया जा रहा है और उसे मुनाफा हो रहा है।

ठगी का खुलासा तब हुआ, जब शिकायतकर्ता ने प्लेटफॉर्म पर दिखाई जा रही रकम को निकालने का प्रयास किया। पैसे निकालने की कोशिश के बावजूद निकासी प्रक्रिया पूरी नहीं हुई। इसके बाद उसे संदेह हुआ कि वह किसी फर्जी निवेश प्लेटफॉर्म के जरिए साइबर ठगी का शिकार हो चुका है। मामले की शिकायत साइबर क्राइम पुलिस स्टेशन में दर्ज कराई गई, जिसके बाद पुलिस ने जांच शुरू की। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश पर इंस्पेक्टर एमसी नायक और उनकी टीम ने तकनीकी जांच के जरिए मामले में शामिल लोगों तक पहुंचने का प्रयास किया। बैंक खातों, लेनदेन और अन्य डिजिटल सुरागों की जांच के बाद पुलिस महाराष्ट्र के परभणी जिले तक पहुंची। कार्रवाई के दौरान दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।

गिरफ्तार आरोपियों की पहचान उद्धव उर्फ रवि गोंधली, उम्र 27 वर्ष, और गोपेंद्र उर्फ गोपू शिंदे, उम्र 23 वर्ष, के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, उद्धव पेशे से डेकोरेशन वर्कर है, जबकि गोपेंद्र छात्र है। दोनों पर साइबर ठगी से जुड़े बैंक खाते और वित्तीय लेनदेन में कथित भूमिका निभाने का आरोप है।

जांच में पुलिस को पता चला कि उद्धव ने अपने नाम से एक फर्म बनाई थी। उसने फर्म के नाम पर बैंक ऑफ इंडिया में करंट अकाउंट खोलने से पहले उद्यम प्रमाणपत्र भी हासिल किया था। पुलिस के आरोप के मुताबिक, बाद में उसने करीब 5,000 रुपये के कमीशन के बदले यह बैंक अकाउंट गोपेंद्र को उपलब्ध करा दिया। इसके बाद कथित तौर पर इस खाते का इस्तेमाल दूसरे आरोपियों ने साइबर ठगी से प्राप्त रकम के लेनदेन के लिए किया।

पुलिस के अनुसार, इस बैंक खाते से 1 सितंबर 2025 से 21 जनवरी 2026 के बीच करीब 1.47 करोड़ रुपये का लेनदेन हुआ। जांचकर्ताओं को संदेह है कि बैंक खातों को कमीशन के बदले उपलब्ध कराने का नेटवर्क साइबर ठगी के बड़े गिरोह से जुड़ा हो सकता है। पुलिस अब यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि खाते में आई रकम किन-किन लोगों से जुड़ी थी और उसे आगे किन खातों में भेजा गया।

मामले की जांच के दौरान नेशनल साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल यानी एनसीसीआरपी के माध्यम से भी बैंक खाते की जानकारी खंगाली गई। पुलिस के अनुसार, जांच में अलग-अलग राज्यों में दर्ज 13 शिकायतों का पता चला। इन शिकायतों में कुल करीब 40.48 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी से जुड़े आरोप सामने आए हैं। इस जानकारी ने मामले को स्थानीय स्तर की एक ऑनलाइन ठगी से कहीं बड़ा बना दिया है।

पुलिस अब गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ कर यह पता लगाने में जुटी है कि उनके संपर्क में कौन-कौन लोग थे और फर्जी निवेश प्लेटफॉर्म के संचालन में उनकी भूमिका किस स्तर तक थी। जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही हैं कि सोशल मीडिया पर विज्ञापन कौन चला रहा था, टेलीग्राम ग्रुप कौन संचालित कर रहा था और निवेशकों से रकम जमा कराने के लिए कितने बैंक खातों का इस्तेमाल किया गया।

साइबर अपराधियों द्वारा निवेश ठगी के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल लगातार एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। आकर्षक विज्ञापन, फर्जी विशेषज्ञों के नाम, नकली निवेश ऐप और वेबसाइट तथा स्क्रीन पर दिखाई जाने वाली बढ़ी हुई रकम के जरिए पीड़ितों को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की जाती है कि उनका निवेश तेजी से बढ़ रहा है। शुरुआत में छोटी रकम पर मुनाफे का भरोसा दिलाकर बाद में बड़ी रकम निवेश कराने का तरीका भी ऐसे मामलों में सामने आता रहा है। इस मामले में भी वेबसाइट पर निवेश और मुनाफे की रकम दिखाई देना पुलिस की जांच का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विशेषज्ञों के अनुसार, किसी प्लेटफॉर्म पर मुनाफा दिखाई देना इस बात की गारंटी नहीं है कि वास्तविक शेयर बाजार में उतनी रकम निवेश की गई है। साइबर ठग अक्सर नकली इंटरफेस के जरिए निवेशक को उसके खाते में काल्पनिक मुनाफा दिखाते हैं और जब निवेशक रकम निकालना चाहता है तो टैक्स, प्रोसेसिंग फीस, सिक्योरिटी या अन्य शुल्क के नाम पर अतिरिक्त पैसे की मांग की जा सकती है। गुजरात पुलिस ने नागरिकों से सोशल मीडिया पर शेयर बाजार में निवेश से संबंधित विज्ञापनों को लेकर विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। पुलिस ने कहा है कि केवल किसी विज्ञापन, टेलीग्राम ग्रुप या व्हाट्सऐप संदेश के आधार पर निवेश नहीं करना चाहिए। निवेश से पहले संबंधित व्यक्ति, कंपनी, प्लेटफॉर्म और उसके आधिकारिक विवरण की स्वतंत्र रूप से पुष्टि करना जरूरी है। पुलिस ने यह भी सलाह दी है कि किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर अपना बैंक खाता, करंट अकाउंट, कंपनी खाता या अन्य वित्तीय साधन किसी दूसरे व्यक्ति को उपलब्ध न कराया जाए। कमीशन के लालच में बैंक खाते का इस्तेमाल करवाना भी गंभीर कानूनी परेशानी का कारण बन सकता है, क्योंकि खाते के जरिए होने वाले संदिग्ध लेनदेन की जांच में खाता धारक भी जांच के दायरे में आ सकता है।

संपादकीय

प्रतिभाओं के मानसिक कष्ट समझे देश

राजस्थान के कोटा से एक और दुखद खबर आई। मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट की तैयारी कर रहे 20 वर्षीय छात्रा ने फंदा लगाकर जान दे दी। इसके अलावा विचलित करने वाली यह खबर भी है कि पिछले पांच सालों में देश के प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग संस्थान आईआईटी में 70 होनहारों ने आत्महत्या की। गंभीर चिंता यह भी कि जुलाई से शुरू हुए सत्र में अब तक आईआईटी के तीन और आईआईएम का एक छात्र आत्महत्या कर चुका है। वहीं आईआईएससी बेंगलुरु में भी पंद्रह दिन में दो छात्रों ने आत्मघात किया है। विडंबना यह है कि इन आंकड़ों में देश के अन्य शिक्षण संस्थानों के आत्मघात के मामले शामिल नहीं किए जाते हैं। जिससे देश में आत्महत्या करने वाले छात्रों की वास्तविक तस्वीर सामने नहीं आ पाती। यह अकल्पनीय है कि जिन इंजीनियरिंग संस्थानों में दाखिला लेना छात्रों का सपना होता है, वहां पहुंचकर कोई छात्र आत्महत्या क्यों कर लेता है? विचारणीय प्रश्न है कि आखिर ये छात्र आत्मघाती कदम क्यों उठा रहे हैं? क्या वे इंजीनियरिंग आदि के पाठ्यक्रम के साथ साम्य नहीं बैठा पाते? क्या सिस्टम की खामियां उन्हें हताश करती हैं? क्या ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के छात्र अंग्रेजी के पाठ्यक्रम के साथ तालमेल नहीं बैठा पाते हैं? अक्सर चर्चा होती है कि उच्च इंजीनियरिंग संस्थानों में देश के चर्चित व महंगे अंग्रेजी स्कूलों से आए छात्रों द्वारा भाषा,जाति, ग्रामीण पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्तर पर अन्य छात्रों के साथ भेदभाव किया जाता है। आरोप है कि अंग्रेजी माध्यम से आये छात्र हिंदी व क्षेत्रीय भाषाओं से पढ़ाई करके आए छात्रों को हेय दृष्टि से देखते हैं। आरोप तो यहां तक हैं कि कुछ शिक्षक भी ऐसे छात्रों के प्रति दुराग्रह रखते हैं। कमोबेश ऐसी चिंताएं ग्रामीण पृष्ठभूमि व वंचित समाज से आए छात्रों को लेकर भी सामने आती हैं। नये छात्रों को परिसर तथा छात्रावासों में भेदभाव जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। फलतः इन छात्रों का आत्मविश्वास डिगता है। कालांतर वे अपनी कक्षाओं की पढ़ाई के साथ साम्य नहीं बना पाते व हताशा में आत्मघात की राह चुनते हैं। इंजीनियरिंग व प्रबंधन से जुड़े देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की आत्महत्या की बढ़ती घातक प्रवृत्ति के मद्देनजर सरकार ने मामले की पड़ताल के लिए पिछली जनवरी में तीन सदस्यीय समिति गठित की थी। इस समिति ने भी स्वीकार किया था कि व्यवस्था में कुछ खामियां जरूर हैं, जिसके चलते छात्र आत्मघात के लिये बाध्य होते हैं। दरअसल, कुछ छात्र शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक आकांक्षाओं के बोझ के साथ अध्ययन कर रहे होते हैं। जिससे उनके मन में यह भय पैदा हो जाता है कि क्या वे अपने जीवन के लक्ष्य हासिल भी कर पाएंगे? बड़ी संख्या में मध्यमवर्गीय, गरीब परिवारों व वंचित समाज की प्रतिभाएं खून-पसीना एक करके इन संस्थानों में दाखिला लेती हैं। उन पर मानसिक दबाव होता है कि परिवार ने पेट काटकर और कर्ज आदि लेकर उन्हें महंगे इंजीनियरिंग व प्रबंधन संस्थानों में दाखिला दिलाया है। यदि वे असफल हुए तो परिवार को क्या मुंह दिखाएंगे? दूसरा, हमारे समाज में इंजीनियर, प्रबंधक व डॉक्टर बनने की भेड़चाल चल रही होती है। ईश्वर हर बच्चे की रचना उसके विशिष्ट गुण के साथ करता है। जरूरी नहीं है कि इंजीनियरिंग में दाखिला लेने वाले हर छात्र की रुचि इंजीनियरिंग में ही हो। कोई छात्र मानविकीय संकाय की प्रतिभा हो सकता है। इंजीनियरिंग, उसकी रुचि व मन का विषय नहीं हो सकता, जिसके चलते वो पूरे मनोयोग से इस पाठ्यक्रम से साम्य नहीं बैठा पाता। आज सोशल मीडिया की विकृतियां तमाम छात्रों की एकाग्रता को बाधित कर रही हैं। सोशल मीडिया उनमें हताशा व आवेश भर रहा है। नये वातावरण से साम्य न बैठा पाने व अन्य कारणों से छात्र मानसिक तनाव में आ जाते हैं। विडंबना यह है कि अधिकांश संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ नहीं हैं। बताया जाता है कि केवल दस फीसदी संस्थानों में ऐसी व्यवस्था है। अन्य संस्थानों में जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञों को बुलाया जाता है। दरअसल,भारत में मानसिक समस्याओं पर डॉक्टर से सलाह लेने में बचा जाता है। छात्रों की चिंता होती है कि कहीं शिक्षक, छात्र व परिवार के लोग उन्हें मनोरोगी न घोषित कर दें। निश्चित ही देश की इन प्रतिभाओं को असमय काल-कवलित होने से बचाने की सख्त जरूरत है।

वीरता-बलिदान के लिए राष्ट्र ने दिया सम्मान

"चाहे कश्मीर हो, नॉर्थ-ईस्ट हो या फिर छत्तीसगढ़ और ओडिशा, हर ओर जहां आंतरिक सुरक्षा का मामला उठता है, वहीं-वहीं सीआरपीएफ ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और अपनी वीरता दिखाई है।

इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर सीआरपीएफ ने कुल 86 पदक जीतकर एक नया रिकॉर्ड बना दिया। उसे केंद्रीय अर्धसैनिक बलों में सबसे अधिक कुल 86 वीरता और सेवा पदक प्राप्त हुए। उसे 24 वीरता पदक, 5 राष्ट्रपति विशिष्ट सेवा पदक और 57 सराहनीय सेवा पदक मिले। झारखंड में अप्रैल 2025 में चलाए गए चुनौतीपूर्ण नक्सलवाद-विरोधी अभियान के दौरान असाधारण बहादुरी दिखाने के लिए 209वीं कमांडो बटालियन फॉर रिजॉल्यूट एक्शन (कोबरा) के डिप्टी कमांडेंट अंजनी कुमार और कांस्टेबल दीपक साह को शौर्य चक्र के लिए चुना गया। कीर्ति चक्र शांतिकाल में दिया जाने वाला दूसरा सबसे बड़ा वीरता पुरस्कार है। 24 वीरता पदक 2024 में जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद-विरोधी दो अभियानों और मणिपुर में उग्रवादियों के खिलाफ सफल अभियान के लिए मिले।

जब वीरता, शौर्य और बलिदान की बात की जाती है, तो हमेशा भारतीय सेना की चर्चा होती है, लेकिन हमारे अर्धसैनिक बल भी किसी से कम नहीं हैं। चाहे कश्मीर हो, नॉर्थ-ईस्ट हो या फिर छत्तीसगढ़ और ओडिशा, हर ओर जहां आंतरिक सुरक्षा का मामला उठता है, वहीं-वहीं सीआरपीएफ ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और अपनी वीरता दिखाई है। 'लाल आतंकवाद' के खात्मे में इसकी बड़ी भूमिका रही है। हाल ही में सीआरपीएफ की कोबरा बटालियन-209 ने एक करोड़ रुपये के इनामी, भाकपा केंद्रीय कमेटी के सदस्य मिसिर बेसरा को गिरफ्तार किया। मिसिर बेसरा पोलित ब्यूरो का आखिरी सदस्य था और उस पर कुल 2.20 करोड़ रुपये का संयुक्त इनाम था। उस पर झारखंड, बंगाल और ओडिशा में 175 से भी अधिक मामले दर्ज थे।

आज झारखंड ही नहीं, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में नक्सलवाद अतीत का दुस्वप्न बन चुका है और वहां के स्थानीय निवासी शांति से रह रहे हैं। अपने घर से सैकड़ों मील दूर घने जंगलों में, जहां पानी की एक बूंद भी मयस्सर नहीं होती, कठिन से कठिन परिस्थितियों में रहते हुए उन्होंने लगभग अदृश्य उग्रवादियों से लोहा लिया और अंततः सफल हुए।

इस साल जुलाई में सीआरपीएफ की स्थापना के 88 साल पूरे हो गए। इन वर्षों में जब भी इसकी आवश्यकता पड़ी है, इसने अपना शौर्य दिखाया है और बलिदान भी दिया है। इन जांबाज जवानों और अधिकारियों के बलबूते ही गृह मंत्री ने यह घोषणा की थी कि 31 मार्च, 2026 तक सशस्त्र नक्सल आंदोलन समाप्त हो जाएगा। यह संभव भी हुआ और नक्सलवादियों की कमर तोड़ दी गई। हाल के वर्षों में इस बल ने और अधिक चुस्ती-फुर्ती दिखाई और बड़े ऑपरेशन किए। गृह मंत्री शाह ने नक्सल-विरोधी अभियानों के लिए इस बल का सशक्तीकरण किया। इसे आधुनिकतम हथियार दिलाए, निगरानी के उपकरण जैसे ड्रोन और संचार के आधुनिक साधन उपलब्ध कराए। समुचित इंटेलिजेंस की व्यवस्था करवाई तथा संबंधित राज्यों के पुलिस बलों के साथ बेहतर तालमेल स्थापित किया।

सीआरपीएफ की कोबरा बटालियनों ने कई ऐतिहासिक ऑपरेशनों को अंजाम दिया, जैसे—ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट, ऑपरेशन ऑक्टोपस, ऑपरेशन डबल बुल और ऑपरेशन चक्रबंधा, जिनसे माओवादियों की शक्ति लगातार क्षीण होती गई। ऑपरेशन ब्लैक फॉरेस्ट जैसे खतरनाक अभियान में 27 खूंखार नक्सली मारे गए। पीपल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी को अपने उन अड्डों को छोड़कर भागना पड़ा, जहां वे वर्षों से जमे बैठे थे।

जवानों ने अपनी वीरता दिखाते हुए और जान पर खेलते हुए दुर्गम इलाकों जैसे—बुढ़ा पहाड़, पारसनाथ, बरमसिया, चक्रबंधा, कारेगुट्टालु और अबूझमाड़ पर फिर से कब्जा कर लिया। इन इलाकों में दशकों से नक्सलियों का कब्जा था और वहां तक पहुंचना दुष्कर था। इनमें उनका सबसे बड़ा कमांडर नंबाल्ला केशव राज उर्फ बसवराजू भी था, जो सीपीआई (माओवादी) का महासचिव था और उस पर 1.5 करोड़ रुपये का इनाम था। इसके अलावा सीआरपीएफ ने कई अन्य शीर्ष कमांडरों को भी मार गिराया, जिनमें पातिराम मांझी, गणेश उल्के और मिलिंद आदि शामिल थे। इनके मारे जाने से माओवादियों में नेतृत्व का संकट खड़ा हो गया और बड़े पैमाने पर उनके काडरों ने छत्तीसगढ़, तेलंगाना और महाराष्ट्र में आत्मसमर्पण कर दिया।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए गृह मंत्रालय ने काफी काम किया। वर्ष 2014 के बाद इन इलाकों में 594 पुलिस स्टेशन बनाए गए, 408 सुरक्षा कैंप स्थापित किए गए और 12,211 किलोमीटर सड़कों का निर्माण किया गया ताकि आवागमन सहज हो सके। इसके अलावा, संचार तंत्र को मजबूत किया गया ताकि संपर्क बना रहे। गांवों में स्कूल, पोस्ट ऑफिस, नजदीक में बैंक और आईटीआई आदि की सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिससे ग्रामीणों का सरकार के प्रति विश्वास बढ़ा।

गृह मंत्रालय ने सीआरपीएफ के जवानों और अधिकारियों के कल्याण के लिए कई योजनाएं बनाई हैं। इसके तहत उन्हें आयुष्मान सीएपीएफ, ई-आवास पोर्टल, सीएपीएफ पुनर्वास तथा कल्याण और पुनर्वास बोर्ड की सुविधाएं दी गई हैं। इसके अलावा, उनके और उनके परिवार के सदस्यों के लिए स्वास्थ्य संबंधी बेहतर सुविधाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। उन्हें वित्तीय रूप से मजबूत बनाने के लिए भी कई योजनाएं बनाई गई हैं, जो सुचारु रूप से चल रही हैं।

प्रेरणा

एक सवाल, दो भाषाएं और स्वामी विवेकानंद का ऐसा जवाब जिसने सबको सोचने पर मजबूर कर दिया

स्वामी विवेकानंद का जीवन केवल आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक चिंतन तक सीमित नहीं था। वे ऐसे महान व्यक्तित्व थे जिनकी सोच में आत्मविश्वास, तर्क, व्यवहारिक बुद्धि और मानवीय संवेदना का अद्भुत मेल दिखाई देता था। वे जिस बात को कहते थे, उसके पीछे कोई न कोई गहरा अर्थ अवश्य होता था। उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे छोटी-सी घटना को भी जीवन की बड़ी सीख में बदल देते थे। उनसे जुड़ी एक प्रसिद्ध घटना यह बताती है कि अपनी संस्कृति पर गर्व करते हुए भी दूसरे की संस्कृति का सम्मान किस प्रकार किया जा सकता है।

एक बार स्वामी विवेकानंद विदेश यात्रा पर गए। उस समय तक उनके विचारों की चर्चा पश्चिमी देशों में काफी फैल चुकी थी। भारतीय दर्शन, वेदांत और आध्यात्मिक चिंतन के प्रति वहां के अनेक लोगों में उत्सुकता पैदा हो गई थी। इसलिए बड़ी संख्या में लोग उनसे मिलने के लिए पहुंचते थे। कोई उनके विचार सुनना चाहता था, कोई उनसे बातचीत करना चाहता था और कोई केवल उनके व्यक्तित्व को करीब से देखना चाहता था।

एक अवसर पर कुछ विदेशी प्रशंसक स्वामी विवेकानंद से मिलने पहुंचे। उनके लिए स्वामी जी एक ऐसे भारतीय संन्यासी थे, जिन्होंने अपनी वाणी और ज्ञान से पश्चिमी दुनिया को प्रभावित किया था। मुलाकात के दौरान उन लोगों ने अपनी सभ्यता और सामान्य व्यवहार के अनुसार स्वामी जी की ओर हाथ बढ़ाया और अंग्रेजी में कहा, "हेलो।"

स्वामी विवेकानंद ने हाथ मिलाने के बजाय दोनों हाथ जोड़कर मुस्कुराते हुए कहा, "नमस्ते।"

उन लोगों ने स्वामी जी के इस व्यवहार को देखा तो उन्हें लगा कि शायद उन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है। उनके मन में यह विचार आया कि संभवतः स्वामी जी अपनी मातृभाषा में ही बातचीत करना पसंद करते हैं। अपनी धारणा को परखने के लिए उनमें से एक व्यक्ति ने हिंदी में स्वामी जी से पूछा, "आप कैसे हैं?"

स्वामी जी ने बिना किसी झिझक के अंग्रेजी में उत्तर दिया, "आई एम फाइन, थैंक यू।"

अब वहां मौजूद लोग आश्चर्यचकित रह गए। कुछ क्षण पहले उन्हें लगा था कि स्वामी जी को अंग्रेजी नहीं आती, लेकिन उन्होंने हिंदी में पूछे गए सवाल का उत्तर अंग्रेजी में दिया। उनके लिए यह एक पहेली बन गई थी। आखिर ऐसा क्यों हुआ?

उन्होंने सीधे स्वामी विवेकानंद से ही इसका कारण पूछा। उन्होंने जानना चाहा कि अंग्रेजी में बोले गए "हेलो" का जवाब उन्होंने हिंदी में "नमस्ते" कहकर क्यों दिया और हिंदी में पूछे गए सवाल का जवाब अंग्रेजी में क्यों दिया।

स्वामी विवेकानंद ने बड़ी सहजता से उनकी ओर देखा और कहा, "जब आप अपनी मां का सम्मान कर रहे थे, तब मैं अपनी मां का सम्मान कर रहा था और जब आपने मेरी मां का सम्मान किया, तब मैंने आपकी मां का सम्मान किया।"

स्वामी जी के इस उत्तर में जितनी सरलता थी, उतनी ही गहराई भी थी। उन्होंने भाषा को केवल शब्दों का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे संस्कृति, भावनाओं और पहचान से जोड़कर देखा। उनके लिए हिंदी भारत की मातृभूमि और मातृभाषा से जुड़ी भावना का प्रतीक थी। जब सामने वाले व्यक्ति ने हिंदी में बात की तो स्वामी जी ने अंग्रेजी में उत्तर देकर उसकी भाषा का सम्मान किया।

इस घटना में स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रप्रेम भी दिखाई देता है और उनकी उदारता भी। वे अपनी संस्कृति को लेकर किसी प्रकार की हीन भावना नहीं रखते थे। उन्होंने यह दिखाने की कोशिश नहीं की कि विदेशी भाषा बोलना ही आधुनिकता या ज्ञान की पहचान है। इसके विपरीत, वे अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति आत्मविश्वास के साथ खड़े रहे।

लेकिन उनकी बात में किसी दूसरी भाषा या संस्कृति के प्रति विरोध भी नहीं था। यही उनकी सोच की खूबसूरती थी। वे चाहते थे कि भारत अपनी पहचान को बचाए रखते हुए दुनिया से सीखे। उनका मानना था कि ज्ञान जहां से मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए, लेकिन ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी जड़ों को भूलना जरूरी नहीं है।

आज के समय में स्वामी विवेकानंद की यह सोच और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। भाषा को लेकर समाज में कई बार अनावश्यक श्रेष्ठता की भावना पैदा हो जाती है। अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति को अधिक पढ़ा-लिखा और आधुनिक समझ लिया जाता है, जबकि अपनी मातृभाषा में सहजता से बोलने वाले व्यक्ति को कभी-कभी कमतर समझने की भूल की जाती है। दूसरी ओर, अपनी भाषा के प्रति प्रेम के नाम पर विदेशी भाषाओं का विरोध करना भी उचित नहीं है।

भाषा ज्ञान का माध्यम है, व्यक्ति की योग्यता का अंतिम प्रमाण नहीं। एक व्यक्ति कई भाषाएं जान सकता है और प्रत्येक भाषा का अपना महत्व हो सकता है। असली शिक्षा यह है कि हम भाषा को जोड़ने का माध्यम बनाएं, बांटने का नहीं।

स्वामी विवेकानंद का जीवन हमें सिखाता है कि अपनी पहचान को लेकर आत्मविश्वासी होना चाहिए, लेकिन दूसरों की पहचान का सम्मान भी करना चाहिए। यदि हम चाहते हैं कि दूसरे हमारी भाषा, परंपरा और संस्कृति का सम्मान करें, तो हमें भी उनके प्रति वही भावना रखनी होगी। सम्मान कभी एकतरफा नहीं होता।

उनका यह छोटा-सा जवाब वास्तव में एक बड़ा जीवन-दर्शन प्रस्तुत करता है। उन्होंने बिना किसी लंबे भाषण के समझा दिया कि संस्कृति का सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि व्यवहार से होता है। अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम रखना गौरव की बात है और दूसरी भाषाओं के प्रति सम्मान रखना सभ्यता की निशानी।

स्वामी विवेकानंद की यह घटना आज की पीढ़ी को विशेष संदेश देती है। आधुनिक बनिए, दुनिया की भाषाएं सीखिए, नई सोच अपनाइए और विश्व के साथ कदम मिलाकर चलिए, लेकिन अपनी जड़ों को मत भूलिए। अपनी संस्कृति पर गर्व कीजिए, मगर दूसरे की संस्कृति को छोटा मत समझिए। क्योंकि सच्ची महानता इस बात में नहीं कि हम कितनी भाषाएं बोलते हैं, बल्कि इस बात में है कि हम कितने सम्मान और संवेदनशीलता के साथ दूसरों से जुड़ते हैं।

एक Water Bomb भारत के बगल में भी रख रहा है China, Brahmaputra पर बन रहा China Motuo Hydropower Project ला सकता है आपदा

नेपाल में ग्लेशियर ढहने से आई विनाशकारी बाढ़ ने सिर्फ हिमालय की नाजुक भौगोलिक संरचना को उजागर नहीं किया है, बल्कि भारत की सीमा से सटे तिब्बत में चीन के निर्माणाधीन 60,000 मेगावाट के मेदोग हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट को लेकर भी खतरे की घंटी तेज कर दी है। नेपाल में सैंकड़ों लोगों की मौत और 750 लोगों के लापता होने की खबरों के बीच अब यह सवाल और गंभीर हो गया है कि दुनिया के सबसे सक्रिय भूकंपीय क्षेत्रों में से एक हिमालय में इतना विशाल बांध आखिर कितना सुरक्षित है।

हम आपको बता दें कि शुरुआत में नेपाल-तिब्बत सीमा क्षेत्र में आई इस आपदा को 4.4 तीव्रता के भूकंप से जोड़कर देखा गया था। लेकिन अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) के नए विश्लेषण ने तस्वीर बदल दी। यूएसजीएस के अनुसार, अतिरिक्त भूकंपीय आंकड़ों और उपग्रह तस्वीरों के अध्ययन से पता चला कि यह भूकंप नहीं था, बल्कि ग्लेशियर के ढहने और उसके बाद मलबे के तेज बहाव से उत्पन्न कंपन थे। ऊंचाई वाले इलाके से टूटकर नीचे आया बर्फ और मलबे का विशाल हिस्सा देखते ही देखते विनाशकारी जलप्रवाह में बदल गया और नेपाल के रसुवा तथा धादिंग जिलों में भारी तबाही मचा दी। इस आपदा में 133 भारतीय नागरिकों समेत सैकड़ों लोग लापता बताए गए हैं। बड़ी संख्या में कैलाश मानसरोवर यात्रा पर गए श्रद्धालुओं के भी प्रभावित होने की खबर है। घर, सड़कें और बिजली परियोजनाएं पानी के तेज बहाव में बह गईं। भू-आकृति विशेषज्ञ डेनियल शुगर के आकलन के मुताबिक, ऊंचाई वाले क्षेत्र में ग्लेशियर के खिसककर टूटने और पिघलती बर्फ से बने पानी ने इस भयावह घटना को जन्म दिया।

लेकिन नेपाल की यह त्रासदी अब भारत के लिए एक बड़ी चेतावनी के रूप में देखी जा रही है। इसकी वजह है चीन का मेदोग या मोटुओ हाइड्रोपावर स्टेशन, जिसका निर्माण यारलुंग त्सांगपो नदी पर किया जा रहा है। यही नदी भारत में प्रवेश करते ही अरुणाचल प्रदेश में सियांग और आगे असम में ब्रह्मपुत्र कहलाती है।

करीब 60 गीगावाट क्षमता वाली यह परियोजना पूरी होने पर दुनिया की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजना बन सकती है। इसके 2033 तक चालू होने का लक्ष्य बताया गया है। परियोजना की अनुमानित लागत 137 अरब डॉलर से 170 अरब डॉलर के बीच है और इसमें यारलुंग त्सांगपो के विशाल मोड़ वाले क्षेत्र में पांच चरणों में जलविद्युत ढांचा विकसित करने की योजना है।

सबसे बड़ा सवाल इसकी विशालता नहीं, बल्कि इसका स्थान है। मेदोग परियोजना उस हिमालयी क्षेत्र में बनाई जा रही है जहां भारतीय और यूरेशियाई टेक्टोनिक प्लेटों का टकराव होता है। जुलाई में चीन की सरकारी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण व्यवस्था से जुड़े भूवैज्ञानिकों के एक अध्ययन ने भी परियोजना स्थल के नीचे सक्रिय पाइझेन फॉल्ट होने की बात कही थी। यानी जिस क्षेत्र में धरती की हलचल स्वयं एक स्थायी खतरा है, वहीं दुनिया का सबसे विशाल बांध खड़ा किया जा रहा है।

रणनीतिक विशेषज्ञ ब्रह्मा चेलानी ने इसे "वॉटर बम" की संज्ञा देते हुए चेतावनी दी है कि किसी बड़े भूकंप, भूस्खलन, हिमस्खलन या अचानक जलप्रवाह की स्थिति में इसका असर भारत के पूर्वोत्तर और आगे बांग्लादेश तक पड़ सकता है। पूर्व राजदूत राजीव डोगरा ने भी अरुणाचल और असम के लिए कहीं बड़ी तबाही की आशंका जताई है।

वहीं भारत की चिंता केवल संभावित बांध दुर्घटना तक सीमित नहीं है। चीन नदी के ऊपरी हिस्से को नियंत्रित करता है। हालांकि ब्रह्मपुत्र के जल का बड़ा हिस्सा भारत में मानसूनी सहायक नदियों से आता है, फिर भी तिब्बत से छोड़े जाने वाले पानी की मात्रा और समय में बड़े बदलाव अरुणाचल और असम के लिए गंभीर समस्या पैदा कर सकते हैं। भारी बारिश के दौरान अचानक बड़ी मात्रा में पानी छोड़ा गया तो बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है, जबकि सूखे दौर में प्रवाह कम होने से कृषि, मत्स्य पालन और स्थानीय समुदाय प्रभावित हो सकते हैं।

अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पेमा खांडू पहले ही इस परियोजना को अस्तित्व से जुड़ा खतरा बता चुके हैं। भारत ने जवाबी रणनीति के तौर पर सियांग नदी पर 11,000 मेगावाट की अपर सियांग मल्टीपर्पज परियोजना को आगे बढ़ाया है, जिसका एक उद्देश्य ऊपरी हिस्से से आने वाले अचानक जलप्रवाह को नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा कवच तैयार करना है। हालांकि इस परियोजना को लेकर अपर सियांग की आदि जनजातीय समुदायों में विस्थापन और पारदर्शिता को लेकर विरोध भी मौजूद है।

देखा जाये तो नेपाल की त्रासदी ने पूर्व चेतावनी का एक गंभीर सवाल खड़ा किया। आरोप है कि तिब्बत की ओर से आने वाली इस विशाल जलराशि के बारे में नेपाल को समय पर सूचना नहीं मिली। भारत के लिए भी यह चिंता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि चीन और भारत के बीच ऐसा कोई व्यापक जल-साझेदारी समझौता नहीं है, जिसके तहत वास्तविक समय में व्यापक हाइड्रोलॉजिकल जानकारी साझा करना अनिवार्य हो।

हिमालय ने नेपाल की बाढ़ के जरिए एक बार फिर बता दिया है कि यहां खतरा केवल भूकंप का नहीं है। ग्लेशियर ढह सकते हैं, पहाड़ टूट सकते हैं, भूस्खलन नदी का रास्ता बदल सकते हैं और देखते ही देखते शांत जलधारा विनाश की दीवार बन सकती है। ऐसे में सक्रिय फॉल्ट लाइन के ऊपर खड़ा हो रहा चीन का मेदोग मेगा डैम केवल इंजीनियरिंग परियोजना नहीं, बल्कि भारत की जल सुरक्षा, पर्यावरण, आपदा प्रबंधन और रणनीतिक सुरक्षा से जुड़ा एक गंभीर प्रश्न है। बहरहाल, नेपाल की तबाही एक स्थानीय आपदा भर नहीं है। यह पूरे हिमालयी क्षेत्र के लिए चेतावनी है, क्योंकि पहाड़ जब करवट लेता है, तो सीमाएं उसकी तबाही को रोक नहीं पातीं।

अभियान

राधा रानी को क्यों सहना पड़ा कृष्ण-विरह? सुदामा के श्राप से जुड़ी है बरसाने की महारानी की अद्भुत कथा

राधा रानी का नाम लेते ही मन में प्रेम, भक्ति और समर्पण की भावना जाग उठती है। श्रीकृष्ण के साथ राधा का संबंध भारतीय भक्ति परंपरा में प्रेम की उस ऊंचाई का प्रतीक माना जाता है, जहां प्रेम किसी सांसारिक अपेक्षा से मुक्त होकर केवल समर्पण बन जाता है। यही कारण है कि भक्तों के लिए श्रीकृष्ण का नाम राधा के बिना अधूरा और राधा का नाम कृष्ण के बिना अपूर्ण माना जाता है। वृंदावन और बरसाना की गलियों से लेकर देश-दुनिया के मंदिरों तक आज भी "राधे-राधे" की गूंज सुनाई देती है।

राधा रानी को बरसाना की महारानी कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार वे केवल एक ऐतिहासिक या पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि भगवान श्रीकृष्ण की परम शक्ति और प्रेम स्वरूपा हैं। उनकी भक्ति में वात्सल्य, माधुर्य, करुणा और त्याग सभी भावों का समावेश दिखाई देता है। राधा-कृष्ण की कथा में सबसे अधिक आकर्षित करने वाली बात यह है कि दोनों का प्रेम सांसारिक बंधनों से परे बताया गया है। उनका मिलन जितना दिव्य माना जाता है, उतना ही उनका विरह भी भक्ति का महान प्रतीक बन जाता है।

धार्मिक परंपराओं में राधा जी के प्राकट्य को लेकर अलग-अलग कथाएं मिलती हैं। अनेक वैष्णव परंपराओं में माना जाता है कि श्रीराधा गोलोक की अधिष्ठात्री शक्ति हैं और भगवान श्रीकृष्ण की आनंदमयी शक्ति के रूप में विराजमान रहती हैं। एक मान्यता के अनुसार जब श्रीकृष्ण गोलोक में रास और दिव्य प्रेम की लीला में लीन होने की इच्छा कर रहे थे, तब उनके वाम अंग से श्रीराधा का दिव्य प्राकट्य हुआ। इस मान्यता के अनुसार राधा और कृष्ण दो अलग-अलग सत्ता नहीं, बल्कि एक ही दिव्य तत्व के दो स्वरूप हैं।

जब भगवान श्रीकृष्ण ने द्वापर युग में पृथ्वी पर अवतार लिया, तब उनकी लीलाओं को पूर्णता प्रदान करने के लिए श्रीराधा का भी पृथ्वी पर अवतरण हुआ। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार राधा जी का जन्म बरसाना क्षेत्र में महाराज वृषभानु और माता कीर्ति के घर हुआ। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को राधा जी के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाता है और यही तिथि आगे चलकर राधाष्टमी के नाम से प्रसिद्ध हुई।

राधाष्टमी के दिन बरसाना सहित देश के अनेक राधा-कृष्ण मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना होती है। भक्त उपवास रखते हैं, राधा रानी का श्रृंगार करते हैं और उनके चरणों में पुष्प अर्पित करते हैं। बरसाना में इस दिन विशेष उत्सव का वातावरण रहता है। भक्तों का विश्वास है कि राधा रानी की कृपा के बिना श्रीकृष्ण की भक्ति भी पूर्ण नहीं होती। इसी भाव के कारण भक्त पहले "राधे" और फिर "कृष्ण" का नाम लेते हैं।

राधा-कृष्ण की दिव्य कथा से जुड़ी एक मान्यता श्रीराधा के पृथ्वी पर अवतरण और उनके कृष्ण-वियोग को एक विशेष श्राप से जोड़ती है। इस कथा में गोलोक की एक घटना का उल्लेख मिलता है, जिसमें विरजा नाम की सखी, सुदामा गोप और श्रीराधा की भूमिका बताई जाती है। हालांकि अलग-अलग धार्मिक ग्रंथों और परंपराओं में इस प्रसंग के विवरण में अंतर मिलता है, लेकिन भक्त परंपरा में यह कथा काफी प्रसिद्ध है।

कथा के अनुसार गोलोक में भगवान श्रीकृष्ण की एक सखी थीं, जिनका नाम विरजा बताया गया है। एक अवसर पर श्रीकृष्ण विरजा के साथ दिव्य विहार कर रहे थे। इसी दौरान श्रीराधा वहां पहुंचीं। कुछ परंपराओं में बताया जाता है कि श्रीराधा को यह देखकर अप्रसन्नता हुई और उनके तथा विरजा के बीच किसी कारण से विवाद जैसी स्थिति उत्पन्न हुई। कथा के अनुसार राधा जी के कठोर शब्दों से विरजा दुखी हो गईं और उन्होंने स्वयं को नदी के स्वरूप में परिवर्तित कर लिया।

विरजा के इस रूपांतरण से वातावरण गंभीर हो गया। इस प्रसंग में सुदामा गोप का प्रवेश होता है। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कथा में जिस सुदामा का उल्लेख है, उन्हें भगवान श्रीकृष्ण के बालसखा सुदामा से अलग माना जाता है। धार्मिक आख्यानों की अलग-अलग परंपराओं में पात्रों और घटनाओं के वर्णन में भिन्नता भी मिलती है।

कथा के अनुसार सुदामा ने विरजा के दुख को देखकर राधा जी से कठोर शब्दों में बात की। उन्हें लगा कि विरजा के साथ अन्याय हुआ है। इसी बात को लेकर सुदामा और श्रीराधा के बीच विवाद बढ़ गया। क्रोध में आकर श्रीराधा ने सुदामा को दानव रूप में जन्म लेने का श्राप दे दिया।

श्रीराधा के श्राप से सुदामा भी क्रोधित हो गए और उन्होंने भी श्रीराधा को पृथ्वी पर मानव रूप में जन्म लेने का श्राप दे दिया। इसी श्राप के कारण श्रीराधा को गोलोक से पृथ्वी लोक पर अवतरित होकर मानव जीवन की लीलाएं करनी पड़ीं और उन्हें श्रीकृष्ण से वियोग भी सहना पड़ा।

यही प्रसंग इस कथा को और अधिक भावपूर्ण बना देता है। यदि राधा और कृष्ण का संबंध केवल सांसारिक प्रेम की कहानी होता, तो उनके विरह को समझना कठिन होता। लेकिन भक्ति परंपरा में उनका प्रेम आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक माना गया है। इस दृष्टि से उनका वियोग भी भक्त के लिए साधना का रूप बन जाता है। श्रीराधा का कृष्ण से दूर होना वास्तव में उनके प्रेम की गहराई को और अधिक प्रकट करता है।

कथा में यह भी बताया जाता है कि पृथ्वी पर जन्म लेने के बाद राधा रानी ने बरसाना को अपनी लीलाभूमि बनाया। वहीं दूसरी ओर श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा में हुआ और उनका बाल्यकाल गोकुल तथा वृंदावन में बीता। राधा और कृष्ण के बीच की लीलाओं का सबसे सुंदर वर्णन ब्रज की लोकपरंपराओं और भक्ति साहित्य में मिलता है। यमुना का किनारा, वृंदावन की कुंज गलियां, बरसाने की पहाड़ियां और गोवर्धन क्षेत्र उनकी दिव्य लीलाओं की स्मृतियों से जुड़े माने जाते हैं।

राधा रानी के बारे में एक महत्वपूर्ण धार्मिक मान्यता यह भी है कि वे गृहस्थ जीवन में आयन की पत्नी थीं और अपने पति के प्रति पूरी तरह समर्पित थीं। भक्त परंपरा में श्रीकृष्ण के प्रति उनका प्रेम सांसारिक संबंधों से अलग और सात्विक बताया जाता है। यही कारण है कि राधा-कृष्ण की कथा को सामान्य प्रेम कहानी की तरह देखने के बजाय भक्त इसे जीव और परमात्मा के बीच दिव्य संबंध के रूप में देखते हैं।

राधा का प्रेम किसी अधिकार की मांग नहीं करता। उसमें त्याग है, प्रतीक्षा है, समर्पण है और अपने प्रिय के सुख में अपना सुख देखने की भावना है। यही कारण है कि श्रीराधा को प्रेम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति माना जाता है। कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद ब्रज में राधा और गोपियों का विरह भक्ति साहित्य का अत्यंत मार्मिक विषय बन गया। कृष्ण भले ही ब्रज से दूर चले गए, लेकिन राधा के हृदय से कभी दूर नहीं हुए।

भक्तों का विश्वास है कि राधा का वास्तविक स्वरूप प्रेम है और कृष्ण उस प्रेम के आधार हैं। इसलिए दोनों को अलग-अलग समझना कठिन है। यही कारण है कि मंदिरों में भी राधा-कृष्ण की संयुक्त पूजा की जाती है। "राधे-कृष्ण", "राधा-माधव", "राधारमण" और "युगल सरकार" जैसे नाम इसी दिव्य एकत्व की भावना को प्रकट करते हैं।

राधा रानी के जीवन से जुड़ी कथाएं यह भी बताती हैं कि प्रेम केवल मिलन का नाम नहीं है। सच्चा प्रेम वह है जो दूरी में भी जीवित रहता है। श्रीकृष्ण के साथ राधा का मिलन कम समय के लिए रहा, लेकिन उनका प्रेम युगों तक अमर हो गया। कृष्ण मथुरा और द्वारका चले गए, लेकिन ब्रज की स्मृतियों में राधा और कृष्ण का प्रेम आज भी उसी तरह जीवित माना जाता है।

इसीलिए बरसाना को केवल एक नगर नहीं, बल्कि राधा रानी की पवित्र भूमि माना जाता है। यहां आने वाले भक्त स्वयं को राधा रानी की शरण में समर्पित करने की भावना रखते हैं। बरसाना की गलियों में "राधे-राधे" का उच्चारण भक्तों के लिए केवल अभिवादन नहीं, बल्कि श्रद्धा का भाव है। मान्यता है कि राधा नाम का स्मरण करने से मन में प्रेम और भक्ति का संचार होता है। सुदामा के श्राप से जुड़ी यह कथा चाहे जिस धार्मिक परंपरा या आख्यान में जिस रूप में वर्णित हो, इसका सबसे महत्वपूर्ण संदेश राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम में छिपा है। यह कथा बताती है कि भगवान की लीलाएं केवल घटनाओं का क्रम नहीं होतीं, बल्कि उनके पीछे गहरे आध्यात्मिक अर्थ भी माने जाते हैं। श्राप भी अंततः लीला का माध्यम बन जाता है और पृथ्वी पर राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम की स्थापना होती है। राधा रानी का पृथ्वी पर अवतरण भक्तों के लिए केवल एक पौराणिक घटना नहीं, बल्कि प्रेम और भक्ति के धरती पर प्रकट होने का प्रतीक है। उनका जीवन यह संदेश देता है कि सच्चा प्रेम स्वार्थ से ऊपर होता है। उसमें पाने से अधिक देने की भावना होती है और मिलन से अधिक प्रिय के प्रति समर्पण महत्वपूर्ण होता है।

PRGI NO. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में घाटलोडिया विधानसभा क्षेत्र में लोक दरबार आयोजित

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला और महापौर श्री हितेशभाई बारोट रहे मौजूद

गांधीनगर : अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) ने गुरुवार को बोपल के बी.के. एम. स्कूल में घाटलोडिया विधानसभा के बोपल, घुमा और शेला सहित अन्य क्षेत्रों के नागरिकों के लिए 'लोक दरबार' कार्यक्रम आयोजित किया।

इस कार्यक्रम में गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के सांसद और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला और महापौर श्री हितेशभाई बारोट मौजूद रहे।

इस लोक दरबार कार्यक्रम में घाटलोडिया विधानसभा क्षेत्र के बोपल, घुमा और शेला जैसे तेजी से विकसित हो रहे रिहायशी इलाकों के नागरिक और सोसाइटी के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं और मुद्दों पर अपनी बात रखी।

कार्यक्रम में विशेषकर हाल ही में पैदा हुई जलभराव की स्थिति, वर्षा जल निकासी (स्टॉर्म वाटर ड्रेनेज), सड़कों और यातायात व्यवस्था, नई पाइपलाइन के जरिए पेयजल की सुविधा, ड्रेनेज लाइन तथा जोनल लेवल की बुनियादी सुविधाओं से जुड़े मुद्दों पर विस्तार से चर्चा और विचार-विमर्श किया गया।

उपस्थित महानुभावों और एएमसी के अधिकारियों ने नागरिकों की समस्याओं और मुद्दों को शांतिपूर्वक सुना और उनके त्वरित एवं उचित समाधान के लिए स्थल पर ही सकारात्मक मार्गदर्शन दिया।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने लोक दरबार में उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि इस क्षेत्र के नागरिकों के साथ उनका पिछले 30 वर्षों से अधिक समय से परिवार जैसा आत्मीयतापूर्ण संबंध रहा है। हाल ही में हुई 20-21 इंच की भारी बारिश की परिस्थिति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अचानक और भारी वर्षा के कारण इस क्षेत्र के नागरिकों को परेशानी का सामना करना पड़ा।

श्री अमित शाह ने आगे कहा कि बाढ़ जैसी स्थिति से पानी उतरने के दूसरे दिन से ही वर्षा जल की स्थायी निकासी के लिए ग्राउंड लेवल पर प्लानिंग शुरू कर दी गई है। उन्होंने क्षेत्र के लोगों को आश्वासन देते हुए कहा कि भविष्य में 30 इंच बारिश हो, तब भी सोसाइटियों और घरों में पानी न भरे, इस प्रकार का सुदृढ़ और समयबद्ध आयोजन किया गया है। बोपल, घुमा, शेला और आसपास के नवविकसित क्षेत्रों के लिए जासपुर से पीने के पानी की लाइन की विशेष व्यवस्था की गई है, जिससे आगामी समय में सभी लोगों को नर्मदा का शुद्ध पेयजल पर्याप्त मात्रा में मिलने लगेगा।

केंद्रीय गृह मंत्री ने आगे कहा कि एक समय ग्राम पंचायत वाले इस क्षेत्र में आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में मेट्रो, एएमटीएस, फ्लाईओवर, ड्रेनेज और खेल परिसर जैसे सड़क एवं बुनियादी ढांचा विकास के अभूतपूर्व काम हुए हैं। साथ ही, इस क्षेत्र में कानून और व्यवस्था तथा सुरक्षा का माहौल अत्यंत मजबूत हुआ है। केंद्र सरकार, राज्य सरकार और अहमदाबाद महानगर पालिका, तीनों प्रशासनिक अंग नागरिकों की समस्याओं के प्रति अत्यंत गंभीर हैं और लोक दरबार में प्राप्त सभी लिखित और मौखिक शिकायतों का जल्द से जल्द निराकरण किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लोक दरबार में उपस्थित नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्षा के बदलते पैटर्न के कारण हाल ही में बोपल और आसपास के इलाकों में लगभग 20 इंच तक भारी बारिश हुई, लेकिन इस प्राकृतिक आपदा के बीच भी केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के निरंतर मार्गदर्शन में प्रशासन द्वारा जल निकासी और राहत कार्य किया गया। आगामी समय में मानसून के दौरान नागरिकों को कम से कम मुश्किलों का सामना करना पड़े, इसके लिए मजबूत ड्रेनेज और सड़कों का आयोजन किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बोपल-घुम क्षेत्र में मिनी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, अंडरपास, वर्षा जल निकासी की व्यवस्था, पीने के शुद्ध पानी की पर्याप्त सुविधा तथा निजी सोसाइटियों में वर्षा जल संचयन के लिए परकोलेशन वेल, आरसीसी रोड और पेवर ब्लॉक के कार्यों को मंजूरी देकर पूरा कर लिया गया है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के देशव्यापी जल संचय अभियान के तहत तालाबों के इंटरलिंकिंग (तालाबों को आपस में जोड़ना) और रिचार्जिंग बोर के जरिए पानी की बूंद-बूंद का संग्रह करने का सफल अभियान चलाया जा रहा है।

बोपल-घुमा क्षेत्र के विकास के बारे में आगे बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि बोपल-घुमा क्षेत्र बाद में अहमदाबाद महानगर पालिका में शामिल हुआ, इसके बावजूद यह सुनिश्चित करने के स्पष्ट प्रयास किए गए कि इस क्षेत्र के लोगों को शहर के अन्य क्षेत्रों के समान सभी नागरिक सुविधाएं और महानगर पालिका के सभी लाभ मिले। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इस लोक दरबार के माध्यम से स्थानीय लोगों द्वारा रखी गई सभी उचित समस्याओं का केंद्रीय गृह मंत्री के सीधे मार्गदर्शन में जल्द से जल्द समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अहमदाबाद के महापौर श्री हितेशभाई बारोट ने कहा कि इस लोक दरबार का मुख्य उद्देश्य बोपल, घुमा और शेला क्षेत्र के नागरिकों और सोसाइटियों के चेयरमैन-सेक्रेटरियों के साथ सीधा संवाद कर स्थानीय समस्याओं का त्वरित निराकरण करना है। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन में बोपल-घुमा के कॉर्पोरेशन में शामिल होने के बाद पेयजल के लिए 11 टैंक, कचरे की डम्पिंग साइट का इकोलॉजी पार्क में रूपांतरण, सड़क, हेल्थ सेंटर और स्विमिंग पूल जैसे अनेक विकास कार्य शुरू किए गए हैं। हाल ही में करीब 20 इंच की भारी बारिश के बाद प्रशासन नागरिकों के बीच रहा है और प्राथमिक सर्वे के आधार पर इन क्षेत्रों में तत्काल 143 करोड़ रुपए से अधिक के मरम्मत और बुनियादी ढांचे के कार्य शॉर्ट नोटिस टेंडर के जरिए शुरू कर दिए गए हैं।

कार्यक्रम में अहमदाबाद के विधायक श्री अमितभाई शाह और श्री अमितभाई ठाकर, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पानी, शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुपम सिंह गहलोत, रेंज आईजी श्री राघवेंद्र वत्स, जिला कलेक्टर श्री भव्य वर्मा, शहर अध्यक्ष श्री प्रेरकभाई शाह, गुजरात राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती धर्मिष्ठाबेन गज्जर, उप महापौर श्रीमती अंजूबेन शाह, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री कमलेशभाई पटेल, मनपा शासक दल के नेता श्री जशुभाई ठाकोर, सचेतक श्री अतुलभाई मिश्रा सहित अहमदाबाद महानगर पालिका और अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण (औडा) के उच्च अधिकारी और बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक मौजूद रहे।

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा ने राज्य 'स्वागत' ऑनलाइन का अवलोकन किया

गांधीनगर : असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार को गांधीनगर में राज्य स्तरीय 'स्वागत' (स्टेट वाइड अटेंशन ऑन ग्रिवेंसेस बाई एप्लीकेशन ऑफ टेक्नोलॉजी) ऑनलाइन कार्यक्रम का अवलोकन किया।

श्री सरमा ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी से ऑनलाइन जनशिकायत निवारण के इस टेक्नोलॉजी युक्त दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल की।

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान 2003 में यह अभिनव पहल शुरू की थी, जो सुशासन और जनशिकायत निवारण का एक विशिष्ट मॉडल बन गई। असम के मुख्यमंत्री इस प्रणाली से काफी प्रभावित हुए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने असम के मुख्यमंत्री को ग्राम, तालुका और जिला सहित त्रिस्तरीय स्वागत ऑनलाइन प्रणाली की विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि 'स्वागत' में प्रस्तुत होने वाली समस्याओं और शिकायतों के निवारण की दर लगभग 90 फीसदी से अधिक है।

इस मौके पर असम के वित्त मंत्री, गांधीनगर के विधायक श्री अल्पेश ठाकोर और मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और मुख्यमंत्री के विशेष कार्य अधिकारी सर्वश्री धीरज पारेख और राकेश व्यास भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की राज्य की महिला विधायकों को रक्षाबंधन की सौगात

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य की महिला विधायकों को रक्षाबंधन पर्व की एक महत्वपूर्ण भेंट के रूप में विकास कार्यों के लिए 28 करोड़ रुपए आवंटित करने का निर्णय किया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के इस निर्णय के अनुसार राज्य विधानसभा में लोगों का प्रतिनिधित्व करने वालीं कुल 14 महिला विधायकों को उनके निर्वाचन क्षेत्रों में सड़क सहित अन्य इंफ्रास्ट्रक्चर विकास कार्यों के लिए 2-2 करोड़ रुपए का विकास अनुदान आवंटित किया जाएगा। इन महिला विधायकों में शहरी क्षेत्र की नौ और ग्रामीण क्षेत्र की पांच विधायक शामिल हैं।

महिला विधायकों को आवंटित किए जाने वाले इस विशेष अनुदान का उपयोग उनके निर्वाचन क्षेत्र की सड़क और बुनियादी ढांचा सुविधाओं की प्राथमिक जरूरतों के हिसाब से विकास कार्यों के लिए किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के इस जनहितकारी दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप संबंधित महिला विधायकों के निर्वाचन क्षेत्रों में कनेक्टिविटी और बेहतर होगी।

भावनगर मंडल में खानपान इकाइयों के स्वच्छता एवं खाद्य सुरक्षा हेतु विशेष जांच अभियान,यात्रियों को स्वच्छ, सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने पर विशेष जोर

रेलवे बोर्ड एवं पश्चिम रेलवे के प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (PCCM-WR) श्री तरूण जैन के निर्देशानुसार रेल यात्रियों को स्वच्छ, सुरक्षित एवं पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे के सभी मंडलों में खानपान इकाइयों का गहन स्वच्छता निरीक्षण एवं विशेष जांच अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में भावनगर मंडल में भी खानपान इकाइयों की नियमित जांच एवं स्वच्छता निरीक्षण किया जा रहा है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के दिशा-निर्देशन में वाणिज्य एवं स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा खानपान इकाइयों में स्वच्छता, खाद्य गुणवत्ता तथा आवश्यक दस्तावेजों की जांच सुनिश्चित की जा रही है। इस अभियान का उद्देश्य यात्रियों को उच्च गुणवत्ता वाली खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के साथ-साथ खानपान इकाइयों में स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना है।

भावनगर मंडल में 15 अगस्त से 21 अगस्त 2026 तक चलाए गए Hygiene & Cleanliness Drive के दौरान अधिकारियों एवं सुपरवाइजरों द्वारा कुल 49 निरीक्षण किए गए। निरीक्षण के दौरान किसी प्रकार की गंभीर अनियमितता नहीं पाई गई। इसी क्रम में 21 अगस्त से 04 सितंबर 2026 तक Food Safety, Hygiene & Cleanliness Campaign चलाया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत 26 अगस्त 2026 तक स्टेशनों एवं ट्रेनों को मिलाकर कुल 35 जांच की जा चुकी हैं। इस अभियान के दौरान भी अब तक कोई बड़ी अनियमितता सामने नहीं आई है।

अभियान के तहत 24 अगस्त 2026 को भावनगर परा स्थित खानपान इकाई का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान वाणिज्य निरीक्षक एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा टी एंड रिफ्रेशमेंट स्टॉल के वेंडर के पास वैध चिकित्सा प्रमाण-पत्र उपलब्ध नहीं पाया गया। यात्रियों की स्वास्थ्य सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उक्त खानपान इकाई को तत्काल बंद कराया गया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने भावनगर मंडल की सभी खानपान इकाइयों के संचालकों एवं वेंडरों से रेलवे द्वारा निर्धारित नियमों एवं मानकों का कड़ाई से पालन करने की अपील की है। उन्होंने खानपान इकाइयों में स्वच्छता बनाए रखने तथा सभी आवश्यक दस्तावेज एवं प्रमाण-पत्र वैध एवं अद्यतन रखने पर विशेष जोर दिया।

श्री वर्मा ने कहा कि रेल यात्रियों के स्वास्थ्य एवं सुविधा से किसी भी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं किया जाएगा। यात्रियों को निर्धारित मानकों के अनुरूप स्वच्छ, सुरक्षित एवं पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना प्रत्येक खानपान इकाई संचालक एवं वेंडर की जिम्मेदारी है।

भावनगर मंडल द्वारा यात्रियों को बेहतर खानपान सुविधाएं, उच्च खाद्य गुणवत्ता एवं स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के लिए स्वच्छता एवं खाद्य सुरक्षा संबंधी निरीक्षण और जांच अभियान निरंतर जारी रखा जाएगा।

राज्य स्तरीय 'स्वागत' – अगस्त 2026

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गौचर भूमि पर अवैध खनन प्रक्रिया के खिलाफ तत्काल कार्रवाई के आदेश दिए

आवास योजना के मकानों को अवैध रूप से किराये पर देने के मामले में जिला कलेक्टर को उचित जांच कर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अगस्त 2026 के राज्य स्तरीय स्वागत ऑनलाइन कार्यक्रम में प्रस्तुत नागरिकों की शिकायतों और समस्याओं का तेज, त्वरित और समय पर निवारण सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन को मार्गदर्शन और निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने अमेरिका और कनाडा का दौरा पूरा कर गांधीनगर लौटते ही राज्य 'स्वागत' में उपस्थित रहकर आम जनों की समस्याओं के निराकरण के प्रति अपनी अनूठी संवेदनशीलता दिखाई।

हर महीने के चौथे गुरुवार को आयोजित होने वाले 'स्वागत' के अंतर्गत अगस्त 2026 के राज्य स्तरीय 'स्वागत' में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने लोगों की शिकायतें सुनीं और उनके निवारण के लिए निर्देश दिए।

इस संदर्भ में उन्होंने मेहसाणा जिले के कड़ा गांव की गौचर (चरागाह) भूमि में हो रही अवैध खनन प्रक्रिया की शिकायत पर जिला प्रशासन और भूविज्ञान एवं खनन आयुक्त को तत्काल प्रभाव से कदम उठाने तथा सख्त कार्रवाई करने के स्पष्ट आदेश दिए।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पाटण जिले में आवास योजना के अंतर्गत बने मकानों को लाभार्थियों द्वारा अवैध तरीके से किराये पर देने के संबंध में प्राप्त शिकायत को गंभीरता से लिया और पाटण जिला कलेक्टर को तत्काल उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

इस राज्य स्तरीय 'स्वागत' कार्यक्रम में गांधीनगर, अरवल्ली, अहमदाबाद, गिर-सोमनाथ, साबरकांठा और वाव-थराद जिले के नागरिक अपनी शिकायतों के साथ उपस्थित थे। श्री भूपेंद्र पटेल ने इन शिकायतों का समय पर तथा शिकायतकर्ता को संतोष हो, इस प्रकार उचित तरीके से निराकरण करने के निर्देश दिए।

अगस्त 2026 के इस राज्य स्तरीय 'स्वागत' में 171 से अधिक शिकायतकर्ता अपनी शिकायतों के साथ मुख्यमंत्री कार्यालय में मौजूद थे। इसके अलावा, जिला स्वागत में 2285 और तालुका स्वागत में 3028 सहित कुल मिलाकर 5313 शिकायतों पर उचित एवं आवश्यक कार्रवाई शुरू की गई।

इस राज्य स्तरीय 'स्वागत' में मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, मुख्यमंत्री के विशेष कार्य अधिकारी (ओएसडी) सर्वश्री धीरज पारेख और राकेश व्यास तथा संबंधित जिलों के कलेक्टर और विभागों के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

मंडल रेल प्रबंधक राजू भडके ने आणंद एवं करचिया यार्ड का किया व्यापक संरक्षा निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने आज वरिष्ठ मंडल अधिकारियों के साथ आणंद एवं करचिया यार्ड का व्यापक संरक्षा निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने दोनों यार्ड में रेल परिचालन से संबंधित विभिन्न संरक्षा व्यवस्थाओं एवं परिचालन प्रक्रियाओं का गहन जायजा लिया। उन्होंने प्रतापनगर - करचिया - आणंद - खंभात रेलखंड का विंडो ट्रेनिंग निरीक्षण एवं खंभात स्टेशन का निरिक्षण भी किया।

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार करचिया यार्ड के निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने विशेष रूप से मालगाड़ियों के सुरक्षित परिचालन से संबंधित पहलुओं की समीक्षा की। उन्होंने यार्ड में उपलब्ध सुरक्षा व्यवस्थाओं तथा परिचालन प्रक्रियाओं का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए।

इसके पश्चात आणंद यार्ड के निरीक्षण के दौरान श्री भडके ने सिग्नलिंग व्यवस्थाओं की समीक्षा की तथा सुरक्षित एवं सुचारु रेल परिचालन सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न ट्रैक पैरामीटर्स का निरीक्षण किया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से रेल परिचालन में सुरक्षा मानकों के प्रभावी अनुपालन के संबंध में जानकारी ली तथा आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

श्री भडके ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि रेल परिचालन में सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है तथा सुरक्षा से संबंधित निर्धारित नियमों एवं प्रक्रियाओं के अनुपालन में किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों को सतर्कता के साथ कार्य करते हुए रेल परिचालन में उच्चतम सुरक्षा मानकों को बनाए रखने के निर्देश दिए।

वडोदरा मंडल द्वारा यात्रियों एवं माल परिवहन की सुरक्षित, सुचारु एवं दक्ष रेल सेवाओं को सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से यार्ड, स्टेशन एवं रेल परिसंपत्तियों का निरीक्षण किया जाता है।

अहमदाबाद में आधी रात रेलवे ब्लॉक के दौरान प्रीकास्ट पैदल सबवे स्थापित; महीनों में होने वाला काम कुछ ही घंटों में पूरा कर रचा नया इतिहास

पश्चिम रेलवे द्वारा प्रदान किए गए एक ही ट्रैफिक ब्लॉक के दौरान वस्त्रापुर, अहमदाबाद में फैक्ट्री निर्मित प्रीकास्ट पैदल सबवे की सफलतापूर्वक स्थापना कर तेज, सुरक्षित और आधुनिक निर्माण तकनीक का प्रभावी प्रदर्शन किया है।

25/26 अगस्त 2026 की आधी रात को मिले 8 घंटे की निर्धारित रेलवे ब्लॉक के दौरान खुदाई, साइट तैयारी से लेकर प्रीकास्ट सबवे स्ट्रक्चर की स्थापना और कार्य पूर्ण करने तक की पूरी प्रक्रिया निर्धारित समय-सीमा से 45 मिनट पहले 7 घंटे 15 में पूरा कर लिया गया

इस कार्य की अहमदाबाद मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश एवं श्री प्रदीप गुप्ता CAO निर्माण के देख रेख में कार्य पूरा किया गया

रेल मंत्री के गुजरात दौरे के बाद महत्वपूर्ण पहल

यह परियोजना माननीय केंद्रीय रेल, सूचना एवं प्रसारण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव के 4 जुलाई 2026 को बागोदरा स्थित संयंत्र के दौरे के बाद की गई एक महत्वपूर्ण पहल का हिस्सा है। जिस दौरान कंपनी ने भारतीय रेलवे के लिए अपने प्रीकास्ट इंफ्रास्ट्रक्चर समाधानों का प्रदर्शन किया था।

इसके बाद अहमदाबाद मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री वेद प्रकाश एवं प्रदीप गुप्ता CAO निर्माण, अहमदाबाद द्वारा रेलवे लाइन के नीचे उच्च गुणवत्ता वाले एवं लीकेज-रोधी प्रीकास्ट पैदल सबवे के निर्माण एवं स्थापना करने का कार्य सौंपा गया।

अहमदाबाद DRM वेद प्रकाश ने कहा कि "वस्त्रापुर में एक ही रेलवे ब्लॉक के दौरान प्रीकास्ट पैदल सबवे की सफल स्थापना तेज, सुरक्षित और आधुनिक निर्माण तकनीक का उत्कृष्ट उदाहरण है। रेलवे के लिए यात्री सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और इस तरह की तकनीक से सीमित समय में गुणवत्तापूर्ण स्थायी इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने के साथ-साथ रेल यातायात में व्यवधान को न्यूनतम किया जा सकता है। यह उपलब्धि रेलवे अधिकारियों, फूजी सिल्वरटेक कंक्रीट और खोडल कंस्ट्रक्शन के बीच बेहतरीन समन्वय एवं टीमवर्क का परिणाम है। इस पैदल सबवे से वस्त्रापुर क्षेत्र के स्थानीय निवासियों को सुरक्षित एवं सुविधाजनक आवागमन की सुविधा मिलेगी और रेलवे ट्रैक पर अनधिकृत आवागमन को रोकने में भी मदद मिलेगी।"

वस्त्रापुर में निर्मित यह पैदल सबवे स्थानीय निवासियों को सुरक्षित एवं सुविधाजनक आवागमन उपलब्ध कराने में सहायक होगा तथा रेलवे ट्रैक पर अनधिकृत पैदल आवागमन एवं ट्रैक क्रॉसिंग को रोकने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

वेजलपुर के विधायक श्री अमित ठाकेर ने कहा कि "वस्त्रापुर क्षेत्र के स्थानीय नागरिकों की लंबे समय से सुरक्षित और सुविधाजनक पैदल आवागमन की आवश्यकता रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने एक दिन पूर्व यहां का दौरा कर स्थानीय लोगों से चर्चा की और रेलवे अधिकारियों के समक्ष इस पैदल सबवे की आवश्यकता एवं शीघ्र स्थापना का विषय रखा था। आज जिस गति से यह कार्य पूरा हुआ है, वह निश्चित रूप से सराहनीय है। प्रीकास्ट तकनीक के माध्यम से कम समय में इस पैदल सबवे की स्थापना होने से स्थानीय नागरिकों को बड़ी सुविधा मिलेगी। इस तकनीक की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि बारिश के दौरान जलभराव की समस्या को कम करने में यह संरचना प्रभावी होगी, जिससे मानसून के समय भी लोगों को सुरक्षित और सुगम आवागमन मिल सकेगा। मैं इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद मंडल, फूजी सिल्वरटेक और निर्माण से जुड़ी पूरी टीम को बधाई देता हूं।"

चुनौतीपूर्ण 8 घंटे की रेलवे ब्लॉक में एक ही रात में पूरा हुआ कार्य

रेलवे लाइन के नीचे अंडरग्राउंड क्रॉसिंग का निर्माण अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्यों में शामिल है। इसमें खुदाई, संरचना की स्थापना तथा रेलवे ट्रैक की बहाली जैसे महत्वपूर्ण कार्यों को सीमित और निर्धारित ट्रैफिक ब्लॉक के भीतर पूरा करना होता है।

फैक्ट्री में निर्मित उच्च गुणवत्ता एवं सटीकता से तैयार प्रीकास्ट घटकों के उपयोग से इस चुनौतीपूर्ण कार्य को एक ही रात 8 घंटे की रेलवे ब्लॉक में 7 घंटा 15 मिनट में पूरा किया।

पारंपरिक निर्माण पद्धति की तुलना में प्रीकास्ट तकनीक के माध्यम से साइट पर निर्माण अवधि को काफी कम किया जा सकता है। इससे रेलवे यातायात में व्यवधान को न्यूनतम रखते हुए तेज गति से स्थायी एवं गुणवत्तापूर्ण इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने में मदद मिलती है।

कार्य के प्रत्येक चरण को पश्चिम रेलवे के अधिकारियों की निगरानी में रेलवे द्वारा निर्धारित सुरक्षा एवं गुणवत्ता मानकों के अनुरूप पूरा किया गया। कार्य पूर्ण होने के बाद रेलवे कॉरिडोर को निर्धारित समय में पुनः यातायात के लिए उपलब्ध कराया गया।

यह उपलब्धि प्रीकास्ट तकनीक, त्वरित साइट निष्पादन और रेलवे तथा निर्माण एजेंसियों के बीच प्रभावी समन्वय का उल्लेखनीय उदाहरण है।

आधुनिक रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए महत्वपूर्ण पहल

वस्त्रापुर पैदल सबवे का यह निर्माण दर्शाता है कि प्रीकास्ट तकनीक भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण और तेज इंफ्रास्ट्रक्चर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

फैक्ट्री में निर्मित प्रीकास्ट संरचनाओं के माध्यम से निर्माण की गुणवत्ता और सटीकता को नियंत्रित रखते हुए साइट पर कार्य की अवधि को कम किया जा सकता है। इससे रेलवे ब्लॉक की आवश्यकता वाली परियोजनाओं में यातायात व्यवधान को भी न्यूनतम किया जा सकता है।

यह तकनीक विशेष रूप से पैदल सबवे, अंडरपास और रेलवे लाइन के नीचे बनने वाली अन्य संरचनाओं के लिए उपयोगी है, जहां कम समय में सुरक्षित, मजबूत एवं गुणवत्तापूर्ण निर्माण आवश्यक होता है।

वस्त्रापुर में यह सफल स्थापना जापानी 'Monozukuri' इंजीनियरिंग कार्यशैली को भारतीय इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के साथ जोड़ने की प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित करती है।

इस परियोजना के सफल क्रियान्वयन के लिए पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा प्रदान किए गए अवसर, समन्वय एवं साइट पर सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता है। कंपनी अपने निष्पादन सहयोगी खोडल कंस्ट्रक्शन के सहयोग एवं टीमवर्क की भी सराहना करती है।

बन्नी के मैदानों में लौटेगा चीते का संसार, चरागाह संरक्षण में भारत ने दुनिया को बताया सामुदायिक मॉडल

नई दिल्ली। गुजरात के कच्छ स्थित बन्नी घास के मैदान एक बार फिर देश के वन्यजीव संरक्षण के मानचित्र पर बड़ी भूमिका निभाने की तैयारी में हैं। भारत ने मंगोलिया की राजधानी उलानबटार में आयोजित संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम सम्मेलन (यूएनसीसीडी) के 17वें कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़ (कॉप17) में बन्नी घास के मैदानों में चीतों को बसाने की प्रस्तावित योजना का उल्लेख करते हुए यह संदेश दिया कि वन्यजीव संरक्षण और स्थानीय समुदायों के हितों को साथ लेकर ही प्राकृतिक संसाधनों का दीर्घकालिक संरक्षण संभव है। केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने सम्मेलन के मंत्रीस्तरीय संवाद में भारत के चरागाहों और घास के मैदानों के संरक्षण के अनुभव साझा किए।

भूपेंद्र यादव ने कहा कि भारत ने वैज्ञानिक योजना और सामुदायिक भागीदारी के मेल से घास के मैदानों और चरागाहों के पुनर्स्थापन में महत्वपूर्ण अनुभव हासिल किया है। उनके अनुसार, किसी भी पुनर्स्थापन कार्यक्रम की सफलता तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब स्थानीय पशुपालक समुदायों को केवल योजनाओं का लाभार्थी न समझकर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षक माना जाए। पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के बीच तालमेल बनाकर पर्यावरण की दृष्टि से प्रभावी, आर्थिक रूप से व्यवहार्य और सामाजिक रूप से समावेशी मॉडल तैयार किए जा सकते हैं।

बन्नी घास के मैदान इसी सोच का एक महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। कच्छ के ग्रेट रण के उत्तरी हिस्से में फैला यह क्षेत्र अपनी अनूठी पारिस्थितिकी के लिए जाना जाता है। यहां 60 से अधिक प्रकार की घास पाई जाती हैं, जो इस क्षेत्र के पशुधन और स्थानीय समुदायों के जीवन का महत्वपूर्ण आधार हैं। बन्नी में मालधारी पशुपालक समुदाय लंबे समय से पशुपालन पर निर्भर रहा है। बताया जाता है कि यह समुदाय 19 पंचायतों में फैला हुआ है और उसके भैंस तथा कांकरेज नस्ल के मवेशी सदियों से इन घास के मैदानों में चरते रहे हैं।

अब बन्नी का नाम चीता संरक्षण से भी जुड़ने जा रहा है। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण यानी एनटीसीए की ओर से मध्य प्रदेश के कुनो राष्ट्रीय उद्यान से दो जोड़ी यानी चार चीतों को बन्नी में स्थानांतरित करने की मंजूरी दी गई है। इसके लिए क्षेत्र में आवश्यक बाड़ा तैयार किए जाने और चीतों के लिए शिकार प्रजातियों को छोड़े जाने की जानकारी सामने आई है। ऐसे में बन्नी घासभूमि आने वाले समय में भारत के चीता संरक्षण कार्यक्रम का एक नया केंद्र बन सकती है। हालांकि, किसी नए क्षेत्र में चीतों को बसाना केवल वन्यजीवों को वहां पहुंचा देने भर का काम नहीं है। इसके लिए पूरे पारिस्थितिकी तंत्र की क्षमता, शिकार प्रजातियों की उपलब्धता, पानी के स्रोत, वनस्पति, क्षेत्र की सुरक्षा और मानव-वन्यजीव संबंध जैसे अनेक पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक होता है। बन्नी में पहले से मौजूद पशुपालक समुदाय की भूमिका भी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह क्षेत्र उनके जीवन और आजीविका से जुड़ा हुआ है।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर इसी व्यापक दृष्टिकोण को सामने रखा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि देश के घास के मैदान केवल वन्यजीवों के आवास नहीं हैं, बल्कि वे बड़ी मानव आबादी और विशाल पशुधन व्यवस्था का आधार भी हैं। हिमालयी चारागाहों से लेकर मध्य भारत के सवाना, राजस्थान के थार और कच्छ के शुष्क क्षेत्रों तक देश में अलग-अलग प्रकार की घासभूमियां मौजूद हैं। दक्षिण भारत के शोला क्षेत्रों तक फैली यह प्राकृतिक संपदा भारत की पारिस्थितिक विविधता को दर्शाती है।

घास के मैदानों का महत्व अक्सर जंगलों की तुलना में कम आंका जाता है, लेकिन जलवायु और पर्यावरण के लिहाज से इनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। गहरी जड़ों वाली घास मिट्टी में कार्बन को संग्रहित करने में मदद करती है। इससे भूमि की गुणवत्ता बनाए रखने के साथ जल के जमीन में रिसाव और भूजल पुनर्भरण की प्रक्रिया को भी बढ़ावा मिलता है। स्वस्थ चरागाह मिट्टी के कटाव को कम करने और सूखे जैसे हालात में पारिस्थितिकी तंत्र को अधिक टिकाऊ बनाने में भी मदद कर सकते हैं।

भूपेंद्र यादव ने बताया कि भारत घास के मैदानों और भूमि क्षरण की स्थिति को समझने के लिए आधुनिक तकनीक का भी इस्तेमाल कर रहा है। उपग्रह आधारित मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण एटलस के माध्यम से घास के मैदानों की पहचान और उनके पुनर्स्थापन की वैज्ञानिक योजना बनाने में मदद मिल रही है। इससे यह पता लगाने में सहायता मिल सकती है कि कौन से क्षेत्र क्षरण का सामना कर रहे हैं और किन स्थानों पर संरक्षण तथा पुनर्स्थापन की जरूरत अधिक है। सरकार की नीति में स्थानीय समुदायों के पारंपरिक अधिकारों को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। केंद्रीय मंत्री ने चराई अधिकार और सामुदायिक वन संसाधन अधिकारों का उल्लेख करते हुए कहा कि ऐसे अधिकार स्थानीय समुदायों की भूमिका को मजबूत करते हैं। यदि जिन लोगों की आजीविका किसी क्षेत्र की प्राकृतिक संपदा से जुड़ी है, उन्हें संरक्षण प्रक्रिया से जोड़ा जाता है, तो योजनाओं की सफलता की संभावना भी बढ़ती है। राजस्थान के 'ओरण' का उदाहरण देते हुए केंद्रीय मंत्री ने बताया कि देश में सामुदायिक संरक्षण की एक समृद्ध परंपरा मौजूद है। स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षित पवित्र वन और प्राकृतिक क्षेत्र जैव विविधता के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ऐसे क्षेत्रों में दुर्लभ वन्यजीवों और पक्षियों के आवास सुरक्षित रहते हैं। ग्रेट इंडियन बस्टर्ड जैसे संकटग्रस्त पक्षियों के संरक्षण के संदर्भ में भी इन पारंपरिक संरक्षण क्षेत्रों की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है।

देशभर में लगभग 25,000 सामुदायिक संरक्षित पवित्र वन क्षेत्रों का उल्लेख करते हुए यादव ने कहा कि ये क्षेत्र करीब छह लाख हेक्टेयर में फैले हुए हैं। इन क्षेत्रों का संरक्षण केवल सरकारी प्रयासों का परिणाम नहीं है, बल्कि स्थानीय समाज की परंपराओं और प्रकृति के साथ उसके लंबे संबंध का भी उदाहरण है।

नेपाल में बाढ़ के संकट में फंसे गुजरातियों की मदद के लिए आगे आई राज्य सरकार, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और प्रशासन हालात पर लगातार नजर बनाए हुए हैं

राज्य सरकार ने प्रभावितों की सहायता के लिए स्टेट इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर के हेल्पलाइन नंबर जारी किए

गांधीनगर : पड़ोसी देश नेपाल में अचानक आई बाढ़ की गंभीर स्थिति और संकट के चलते वहां फंसे भारतीयों, विशेषकर गुजरात के पर्यटकों की सुरक्षा के लिए राज्य सरकार पूरी तरह से कटिबद्ध है।

राज्य सरकार के प्रवक्ता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी इस संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में प्रधानमंत्री कार्यालय लगातार नेपाल सरकार के साथ संपर्क में है। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह भी वहां फंसे गुजरातियों और देश के अन्य नागरिकों की स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं।

प्रवक्ता मंत्री ने आगे कहा कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल लगातार केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और विदेश मंत्रालय के साथ संपर्क में रहते हुए जानकारी का आदान-प्रदान कर रहे हैं। विदेश मंत्री श्री एस. जयशंकर और उनके मंत्रालय द्वारा सभी आवश्यक जानकारियां और मदद पहुंचाने के प्रयास तेज कर दिए गए हैं।

अब तक मिली जानकारी के अनुसार गुजरात के विभिन्न जिलों के लगभग 12 लोगों के गुम होने की रिपोर्ट है, जिनमें अहमदाबाद, आणंद, राजकोट, वलसाड, सूरत, खेड़ा, अमरेली, गांधीनगर और वडोदरा जिले के पर्यटक शामिल हैं। प्रशासन तंत्र से संपर्क करने वाले परिवारों द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर प्रशासन ने आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में प्रशासन ने सभी जिलों में हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। इसके अलावा, गांधीनगर स्थित स्टेट इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर द्वारा भी हेल्पलाइन नंबर कार्यरत किए गए हैं, जिन पर कोई भी नागरिक मदद के लिए संपर्क कर सकता है।

हेल्पलाइन नंबर : 079-23251900, 9978405304, 1070

प्रवक्ता मंत्री ने राज्य की जनता को आश्वासन देते हुए बताया कि दुःख की इस घड़ी और संकट के समय में राज्य सरकार हर गुजराती परिवार के साथ खड़ी है। सरकार सभी संभावित प्रयास कर रही है और प्रभावितों को सुरक्षित वापस लाने के लिए केंद्र सरकार के साथ मिलकर काम कर रही है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का अहमदाबाद हवाई अड्डे पर ऊष्मापूर्ण स्वागत

उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी द्वारा मुख्यमंत्री का अहमदाबाद हवाई अड्डे पर स्वागत,गुजरात में बहुत अच्छा पूंजी निवेश आएगा : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री तथा मुख्य सचिव सहित उच्चाधिकारियों की वाइब्रेंट गुजरात समिट संदर्भ में अमेरिका व कनाडा की यात्रा सफलतापूर्वक संपन्न

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अमेरिका और कनाडा की सफल यात्रा कर अहमदाबाद पधारे, तब हवाई अड्डे पर उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी द्वारा उनका ऊष्मापूर्ण स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री ने हवाई अड्डे पर मीडिया से कहा कि गुजरात में अधिक से अधिक वैश्विक निवेश आए; ऐसा हमारा प्रयास रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के वैश्विक संबंधों और उन पर विश्वास हमें इस यात्रा में देखने को मिला है। प्रधानमंत्री पर पूर्ण विश्वास के कारण लोग हर सेक्टर में अधिक निवेश करना चाहते हैं। भारत में आने वाला निवेश गुजरात में आए; इसके लिए हमारा यह प्रयास था। मुख्यमंत्री ने जोड़ा कि सेमीकंडक्टर, एआई, डेटा सेंटर, मैन्युफैक्चरिंग आदि क्षेत्रों के अलावा गिफ्ट सिटी के लिए वित्तीय क्षेत्र की बड़ी-बड़ी कंपनियों के साथ बैठकें बहुत अच्छी रही हैं और वे लोग गुजरात में निवेश के लिए उत्सुक हैं।

मुख्यमंत्री ने अमेरिका और कनाडा की यात्रा फलदायी रहने के विश्वास के साथ कहा कि गुजरात में बहुत अच्छा पूंजी निवेश आएगा।

वैश्विक निवेशकों तथा इनोवेटर्स को आगामी 10-12 जनवरी, 2027 को प्रधानमंत्री की प्रेरणा से आयोजित होने वाली 11वीं वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में इन्वेस्टमेंट, कोलैबोरेशन और पार्टनरशिप के लिए आमंत्रित किया गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में आगामी वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2027 को प्रोत्साहन देने के लिए गुजरात सरकार के मुख्यमंत्री तथा मुख्य सचिव सहित उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिका तथा कनाडा की यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण की है।

इस प्रतिनिधिमंडल ने सैन फ्रांसिस्को, वॉशिंगटन डी.सी. और न्यूयॉर्क में निवेशकों, टेक्नोलॉजी के अग्रणियों और युवा उद्यमियों तथा इनोवेटर्स और गुजराती डायस्पोरा के साथ मुलाकातें कीं।

मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, वित्त विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री टी. नटराजन, उद्योग एवं खान विभाग की अपर मुख्य सचिव श्रीमती ममता वर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री संजीव कुमार तथा मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव श्री डॉ. विक्रांत पांडे के अलावा राज्य के उद्योग-व्यापार जगत का प्रतिनिधिमंडल भी मुख्यमंत्री के साथ इस विदेश यात्रा में सहभागी बना।

मुख्यमंत्री तथा मुख्य सचिव सहित उच्चाधिकारियों के साथ यह प्रतिनिधिमंडल विदेश यात्रा सफलतापूर्वक पूरी कर गुजरात वापस लौटा, तब अहमदाबाद हवाई अड्डे पर इंडेक्स-बी के प्रबंध निदेशक श्री के. सी. संपत, अपर उद्योग आयुक्त श्री अमित प्रकाश यादव, अहमदाबाद शहर पुलिस आयुक्त श्री अनुप सिंह गहलोत, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री भव्य वर्मा सहित अधिकारियों ने उपस्थित रहकर उसका स्वागत किया और सफल यात्रा के लिए शुभकामनाएँ दीं।

वांसजालिया-राणावाव रेलखंड में ऊंट का सुरक्षित रेस्क्यू लोको पायलट की सतर्कता से टला संभावित हादसा

वांसजालिया–राणावाव रेलखंड में 27 अगस्त को तड़के एक ऊंट के रेल ट्रैक पर आ जाने की घटना में लोको पायलट की सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से संभावित दुर्घटना को टाल दिया गया। ट्रेन संख्या 19015 दादर–पोरबंदर सौराष्ट्र एक्सप्रेस के लोको पायलट श्री कालिदास एवं सहायक लोको पायलट श्री जगदीश साहू ने वांसजालिया के निकट ब्रिज संख्या 95 पर ट्रैक के बीच ऊंट को बैठे देखा। उन्होंने तत्काल आपातकालीन ब्रेक लगाकर ट्रेन को सुरक्षित दूरी पर रोक दिया।

घटना लगभग 04:30 बजे की है। सहायक लोको पायलट द्वारा मौके पर जाकर निरीक्षण करने पर पाया गया कि ऊंट ब्रिज के हिस्से में फंसा हुआ था। इसकी सूचना तत्काल ट्रेन मैनेजर श्री एस. पी. मीणा, रेलवे कंट्रोल एवं स्टेशन अधीक्षक, वांसजालिया को दी गई।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के निर्देशानुसार रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा तत्काल रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। ऊंट को सुरक्षित रूप से ट्रैक से निकालने के लिए आवश्यक संसाधनों के साथ क्रेन की भी सहायता ली गई। समन्वित एवं त्वरित प्रयासों के फलस्वरूप लगभग 08:45 बजे ट्रैक को सुरक्षित रूप से क्लियर कर दिया गया तथा रेल परिचालन बहाल किया गया।

रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सराहनीय तत्परता और समन्वय का परिचय दिया। ऊंट को भी सुरक्षित रूप से ट्रैक से बाहर निकाल लिया गया।

इस घटना के कारण सुरक्षा की दृष्टि से ट्रेन संख्या 59214 पोरबंदर–भाणवड एवं ट्रेन संख्या 59213 भाणवड–पोरबंदर दैनिक यात्री गाड़ियों को पूर्णतः रद्द करना पड़ा। ट्रेन सं. 19015 दादर-पोरबंदर 4 घंटा 32 मिनट, ट्रेन सं. 19207 पोरबंदर-राजकोट 3 घंटा 15 मिनट, ट्रेन सं. 12905 पोरबंदर-शालीमार 55 मिनट एवं ट्रेन सं. 59557 पोरबंदर-भावनगर 2 घंटा 43 मिनट विलंब हुयीं। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट की सतर्कता तथा रेस्क्यू ऑपरेशन में लगे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की त्वरित कार्रवाई एवं सराहनीय कार्य के लिए प्रशंसा की। सतर्कता, संवेदनशीलता और सुरक्षा—यही भावनगर मंडल की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

भावनगर मंडल में दिवंगत रेलकर्मी के परिवार को डीएसआरडब्ल्यूएफ के माध्यम से 50,000 एवं मंडल स्तर पर 25,000 की आर्थिक सहायता

भावनगर मंडल में रेल कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के कल्याण के लिए निरंतर मानवीय एवं संवेदनशील प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में डिविजनल स्टाफ रिलीफ एंड वेलफेयर फंड (DSRWF) के माध्यम से सावरकुंडला स्टेशन पर कार्यरत ट्रैक मेंटेनर के निधन के कारण उनके परिवार को तत्काल 50,000/- की सहायता राशि प्रदान की गई।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन की देखरेख में रेल कर्मचारियों एवं उनके आश्रित परिवारों को आवश्यकता के समय हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी मानवीय पहल के अंतर्गत दिवंगत रेलकर्मी के परिवार को DSRWF के माध्यम से 50,000/- की तत्काल सहायता राशि प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त, भावनगर मंडल द्वारा आकस्मिक राहत के रूप में 25,000/- की अतिरिक्त सहायता राशि भी प्रदान की गई, ताकि कठिन समय में शोकाकुल परिवार को आवश्यक आर्थिक संबल मिल सके।

DSRWF के माध्यम से रेल कर्मचारियों को संकट एवं मृत्यु जैसी परिस्थितियों में तत्काल आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाती है। यह पहल रेल कर्मचारियों के कल्याण के प्रति भावनगर मंडल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। मंडल प्रशासन द्वारा कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के हित में कल्याणकारी गतिविधियों को निरंतर प्राथमिकता दी जा रही है।

भावनगर रेलवे मंडल में उल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया हरियाली तीज समारोह

पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के अधिकारी क्लब में 26 अगस्त 2026 को पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा की देखरेख में हरियाली तीज समारोह का भव्य एवं उल्लासपूर्ण आयोजन किया गया। समारोह में WRWWO, पश्चिम रेलवे की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पाण्डेय की गरिमामयी उपस्थिति रही।

समारोह का शुभारंभ अपराह्न 15:00 बजे हुआ और यह कार्यक्रम 18:00 बजे तक चला। इस दौरान महिला समिति की सदस्यों द्वारा विभिन्न रंगारंग एवं मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। भगवान शिव एवं माता पार्वती के विवाह पर आधारित विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुति ने उपस्थित सभी सदस्यों का मन मोह लिया।

हरियाली तीज की पारंपरिक एवं सांस्कृतिक भावना को जीवंत बनाए रखने के लिए कजरी गीतों का सुंदर गायन भी प्रस्तुत किया गया। इसके साथ ही विभिन्न मनोरंजक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सदस्यों ने उत्साह एवं उमंग के साथ भाग लिया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली विजेता प्रतिभागियों को WRWWO, पश्चिम रेलवे की अध्यक्षा श्रीमती सुजाता पाण्डेय द्वारा उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों को हरियाली तीज की शुभकामनाएँ दीं तथा भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं को जीवंत बनाए रखने में ऐसे आयोजनों के महत्व पर प्रकाश डाला।

पूरे समारोह के दौरान अधिकारी क्लब में उत्साह, उमंग एवं सौहार्द का वातावरण बना रहा। कार्यक्रम का समापन मधुर संगीत की धुनों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक हुआ।

हरियाली तीज समारोह ने भारतीय संस्कृति, परंपरा, महिला सहभागिता एवं आपसी सौहार्द की सुंदर झलक प्रस्तुत की। समारोह को सफल एवं यादगार बनाने में WRWWO, भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

गत चार महीनों में 1 लाख से अधिक नागरिकों ने घर बैठे प्रमाणपत्र प्राप्त किए, 'सुगम डिजिटल गुजरात' को मिला अभूतपूर्व जनसमर्थन

छात्रों और रोजगार के इच्छुक लोगों के लिए जाति, आय और ईडब्ल्यूएस जैसे प्रमाणपत्र अब ऑनलाइन उपलब्ध

गांधीनगर : राज्य सरकार ने नागरिक सेवाओं के डिजिटलीकरण को और तेज करते हुए कल्याणकारी और शैक्षणिक योजनाओं के लिए जाति और आय सहित 7 विभिन्न प्रमाणपत्रों को ऑनलाइन उपलब्ध कराया है। निदेशक, विकासशील जाति कल्याण विभाग की विज्ञप्ति के अनुसार इस पहल के परिणामस्वरूप गत चार महीनों में एक लाख से अधिक नागरिकों ने 'सुगम डिजिटल गुजरात' पोर्टल के माध्यम से इन ऑनलाइन सेवाओं का सफलतापूर्वक लाभ उठाया है। 'सुगम डिजिटल गुजरात' पहल मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन और सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. प्रद्युमन वाजा एवं राज्य मंत्री डॉ. मनीषाबेन वकील के नेतृत्व में शुरू की गई है। विज्ञप्ति के अनुसार 'सुगम डिजिटल गुजरात' पोर्टल के जरिए अब नागरिक विभिन्न प्रकार के प्रमाणपत्र आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, जिनमें सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग का प्रमाणपत्र, नॉन-क्रीमीलेयर प्रमाणपत्र, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग (ईडब्ल्यूएस) का पात्रता प्रमाणपत्र, अनारक्षित श्रेणी का प्रमाणपत्र, धार्मिक अल्पसंख्यक प्रमाणपत्र, घुमंतू और विमुक्त जाति प्रमाणपत्र तथा आय प्रमाण पत्र शामिल हैं। इस डिजिटल पहल के चलते अब नागरिकों को इन सात महत्वपूर्ण प्रमाणपत्रों को पाने के लिए सरकारी कार्यालयों में जाने की जरूरत नहीं होगी। नागरिक घर बैठे ही इन प्रमाणपत्रों के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे और ई-साइन वाले डिजिटल प्रमाणपत्र सीधे ऑनलाइन ही प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा, ये प्रमाणपत्र व्हाट्सऐप और डिजिलॉकर जैसे सुविधाजनक माध्यमों पर भी उपलब्ध होंगे, जिससे नागरिक इन्हें सुरक्षित रखते हुए कभी भी उपयोग में ले सकेंगे।

इस सुविधा से विशेषकर छात्रों और सरकारी नौकरी की तैयारी करने वाले युवाओं को बड़ी राहत मिलेगी। एडमिशन, स्कॉलरशिप और भर्ती प्रक्रिया के लिए आवश्यक ये प्रमाणपत्र अब दस्तावेजों की जांच के बाद तुरंत ही ई-साइन के साथ ऑनलाइन मिल जाएंगे। इससे प्रशासनिक विलंब कम होगा, पूरे सिस्टम में पारदर्शिता आएगी और नागरिकों को सभी शैक्षणिक और रोजगार-उन्मुख सेवाएं समय पर प्रदान की जा सकेंगी।

राज्य सरकार के इस सराहनीय निर्णय को नागरिकों की ओर से शानदार प्रतिक्रिया मिल रही है। इस बारे में विकासशील जाति कल्याण विभाग के निदेशक श्री विक्रमसिंह जादव ने राज्य के सभी नागरिकों से इन प्रमाणपत्रों के लिए सरकारी कार्यालयों में जाने के बजाय https://www.digitalgujarat.gov.in/Services/SugamDGAbhiyanServices.aspx पोर्टल पर उपलब्ध डिजिटल सेवाओं का अधिक से अधिक उपयोग करने की अपील की है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में 'लोकभवन' में रक्षाबंधन पर्व भावपूर्वक मनाया गया

विभिन्न समाजों, संस्थाओं और वर्गों की बहनों-बेटियों ने मुख्यमंत्री को रक्षासूत्र बांधकर दीर्घायु की प्रार्थना की

गांधीनगर : पवित्र रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर गुरुवार को गांधीनगर स्थित 'लोकभवन' में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में स्नेह एवं सुरक्षा के प्रतीक समान रक्षाबंधन कार्यक्रम अत्यंत उत्साहपूर्ण तथा भावपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया।

राज्यभर से आईं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, सेवाभावी संगठनों, ब्रह्माकुमारीज और दिव्यांग बहनों ने इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल को राखी बांधकर उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगलकामना की।

मुख्यमंत्री ने राखी बांधने आईं सभी बहनों का आत्मीयतापूर्वक स्वागत कर उनकी शुभकामनाओं को सहर्ष स्वीकार किया।

कार्यक्रम के दौरान शिक्षा राज्य मंत्री श्री रिवाबा जाडेजा, महापौर श्री मीराबेन पटेल, विधायकगण सर्वश्री रीटाबेन पटेल, निमिषाबेन सुथार, श्री पायलाबेन कुकराणी, भाजपा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री वर्षाबेन दोशी, प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष श्री अंजुबेन वेकरिया सहित उपस्थित महानुभावों, विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों तथा अधिकारियों की उपस्थिति में समग्र वातावरण स्नेह एवं बंधुत्व के रंग में रंग गया।